RNI No UPHIN/2015/65982

₹10

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

वर्ष : 12 अंक : 10 16-31 मई 2026

हिन्दुओं की हुंकार

यूपी का विधाता अन्नदाता

3.12 करोड़ किसानों को
प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि
₹99 हजार करोड़+
की राशि अंतरित

रिकॉर्ड गन्ना मूल्य भुगतान
₹3.15 लाख करोड़+
गन्ना मूल्य ₹315 से बढ़ाकर
₹400 प्रति क्विंटल

बिचौलिया मुक्त बाजार
ई-मंडी में 6.42 करोड़+ पर्चियां

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
3.53 करोड़+ किसानों
को क्षतिपूर्ति

किसानों को कार्बन क्रेडिट धनराशि वितरित करने वाला
प्रथम राज्य

पीएम कुसुम योजना के अंतर्गत
86 हजार+
सोलर पंपों की स्थापना

नि:शुल्क बाजार भाव एवं मौसम की जानकारी हेतु **'उत्तर प्रदेश मंडी भाव'** मोबाइल ऐप

86 लाख+
लघु/सीमांत किसानों का फसल ऋण माफ

विकास की गति अपार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

पाक्षिक

वर्ष : 12 अंक : 10

RNI. No. UPHIN/2015/65982

सम्पादक

शिवबली विश्वकर्मा

सम्पादक मण्डल

डॉ. अनूप आनन्द

सुरेश सिंह

विवेक रॉय

मृत्युंजय दीक्षित

कार्यालय

संस्कृति भवन

राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004

ई-मेल

avadhprahari@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक शम्भू दयाल पुरवार द्वारा भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति के लिए नूतन आफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नग्र लखनऊ दूरभाष +91-6389500007, 9151522252 से मुद्रित एवं संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ से प्रकाशित।

Scan & Subscribe

अनुक्रम

हिन्दुओं की हुंकार 04

अधिमास : आस्था, आत्मशुद्धि का अतिरिक्त... 07

उदन्त मार्तण्ड : हिन्दी पत्रकारिता के सूर्य का... 08

आत्मशुद्धि का भारतीय पर्व गंगा दशहरा 09

बड़े मंगल का भण्डारा : भारतीय अन्नदान... 10

वीर मल्हिया पासी 12

हिन्दू मन्दिर है भोजशाला : उच्च न्यायालय 13

बिना दवा कब्ज दूर करने के असरदार तरीके 16

लाभदायक है केले की खेती 17

सुभाषित

तथाप्येको रामः सकलमवधीद्राक्षसकुलं ।
क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे॥

आपदाओं के विरुद्ध श्रीराम ने सभी राक्षसों का संहार किया। व्यक्ति की सफलता अपने क्षमताओं पर निर्भर करती है।

सम्पर्क- 0522-4106333, 90 90 30 40 96

अवध प्रहरी प्रकाशन सेवा न्यास

खाता संख्या : 02510210002360
आई एफएससी : UCBA0000251
यूको बैंक, शाखा नाका, लखनऊ

पत्रिका प्राप्ति के लिए सहयोग राशि

वार्षिक सदस्यता	₹ 200
12 वर्षीय सदस्यता	₹ 1000
आजीवन सदस्यता	₹ 2000

लेखक के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

विभाजन की भाषा

स्वतंत्रता के समय लगभग 95 प्रतिशत मुसलमानों ने भारत विभाजन के पक्ष में मुस्लिम लीग को वोट दिया था। परिणाम स्वरूप पाकिस्तान अस्तित्व में आया, जिसमें आज का बांग्लादेश भी सम्मिलित था। उस समय यह तर्क दिया गया था कि मुसलमानों के धार्मिक विश्वास हिन्दू, सिख, बौद्ध और जैन से अलग हैं, इसलिये वे इनके साथ नहीं रह सकते लेकिन उसी समय बड़ी चतुराई से बहुत बड़ी संख्या में मुसलमान पाकिस्तान न जाकर भारत में रह गये क्योंकि उन्हें यहाँ जिहाद करना था और इस भूमि को दारुल इस्लाम बनाना था। अब यह बात सिद्ध भी होती जा रही है। जिस अलग पहचान को लेकर देश का विभाजन हुआ, उस अलग पहचान का मुद्दा आज भी मुसलमान नहीं छोड़ रहे हैं। इसीलिये बाबा साहब डॉ. भीमराव आम्बेडकर ने कहा था कि जब धर्म के आधार पर विभाजन हो रहा है तो सभी मुसलमानों को पाकिस्तान चला जाना चाहिये और सभी हिन्दुओं को भारत आ जाना चाहिये क्योंकि मुसलमानों को राष्ट्र और मजहब में से एक को चुनना होगा तो वे अपने मजहब को चुनेंगे। ताजा विवाद जनगणना में उर्दू भाषा को लेकर है। मौलानाओं द्वारा मुस्लिमों से अपील की गयी कि वे जनगणना के लिये धर्म के कॉलम में इस्लाम और मातृभाषा के कॉलम में उर्दू लिखवायें। यही वह बिन्दु है जो सवालों के घेरे में खड़ा होता है। आखिर ऐसी अपील की जरूरत क्यों पड़ी? जनगणना एक संवैधानिक प्रक्रिया है, जहाँ नागरिक अपनी वास्तविक जानकारी देतें हैं, न कि किसी संगठित पहचान अभियान का हिस्सा बनते हैं। फिर किसी मजहबी मंच से यह आदेशात्मक अपील क्यों ?

सबसे बड़ा सवाल मातृभाषा को लेकर है। क्या भारत के सभी मुस्लिमों की मातृभाषा उर्दू है? उत्तर प्रदेश, बिहार आदि हिन्दी भाषी प्रदेशों का मुसलमान हिन्दी ही बोलता है। फिर उससे मातृभाषा उर्दू लिखवाने का आग्रह क्यों? बंगाल में बंगाली, केरल में मलयालम, तमिलनाडु में तमिल और कश्मीर में कश्मीरी बोली जाती है। फिर पूरे मुस्लिम समाज को उर्दू के साथ जोड़ने का आग्रह क्या वास्तविकता है या एक वैचारिक एजेण्डा? क्या यह भाषा को सांस्कृतिक अभिव्यक्ति से हटाकर धार्मिक पहचान का प्रतीक बनाने की कोशिश नहीं? क्या अब उर्दू भाषा की आड़ में कोई बड़ा राजनीतिक एजेण्डा साधने की कोशिश हो रही है। यदि कोई व्यक्ति स्वाभाविक रूप से उर्दू बोलता है तो उसे जनगणना में अपनी भाषा उर्दू लिखवाने का अधिकार है लेकिन समुदाय विशेष से संगठित अपील करना यह संकेत देता है कि जनगणना को भी संख्या और पहचान की राजनीति के रूप में देखा जा रहा है। प्रश्न यह है कि क्या देश की संवैधानिक प्रक्रियाओं को भी मजहबी दृष्टि से संचालित किया जायेगा ?

एक ओर कहा जाता है कि भाषा को धर्म से नहीं जोड़ा जाना चाहिये। फिर मुसलमानों की भाषा हिन्दी क्यों नहीं हो सकती? क्या मुस्लिम पहचान का स्वाभाविक पर्याय केवल उर्दू ही है? क्या यह भारतीय भाषाई विविधता को सीमित करने जैसा नहीं? क्या भाषाई आधार पर मजहबी तीर चलाये जा रहे हैं? सबसे गम्भीर बात यह है कि ऐसी अपीलें समाज में अलगाव की भावना को मजबूत करती हैं। जनगणना सरकारी आँकड़े जुटाने का विषय है, धार्मिक लामबन्दी का नहीं। देश की योजनाओं, अधिकारों और सुविधाओं में सभी भारतीय समान रूप से भागीदार हैं, तो फिर हर राष्ट्रीय प्रक्रिया में अलग पहचान को विशेष रूप से उभारने की जरूरत क्यों महसूस होती है? यही वह प्रश्न है जो इस मुहिम को कठघरे में खड़ा करता है। मुसलमानों द्वारा राष्ट्रीय प्रक्रियाओं को पहचान की राजनीति का माध्यम बनाना लोकतांत्रिक भावना को कमजोर करता है। देश संविधान से चलता है, समुदायों की प्रतिस्पर्धा से नहीं। अधिकारों के साथ कर्तव्य भी जुड़े होते हैं, और सबसे बड़ा कर्तव्य राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना है।। ●

पश्चिम बंगाल चुनाव
हिन्दुओं की हुंकार

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में हिन्दुओं की एकजुटता ने इतिहास रच दिया। जात-पात की करो विदाई, हिन्दू-हिन्दू भाई-भाई और बँटोगे तो कटोगे जैसे नारे भले ही हिन्दी प्रदेशों के थे लेकिन धरातल पर यहाँ उतरे। बांग्लादेश में हुईं भयाभव घटनाओं के बाद राज्य के हिन्दुओं ने अपने अस्तित्व पर संकट अनुभव किया। इसके बाद जो परिणाम आया, वह सभी ने देखा। इन चुनाव परिणामों की गूँज पूरे देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी सुनायी दी। अभी तक देखा जाता था कि मुसलमान ही 90 से 95 प्रतिशत मतदान करते हैं लेकिन इस बार हिन्दू भी इससे अधिक एकजुटता से वोट डालने पहुँचे। फलस्वरूप मतदान के पहले ही चरण में दिखने लगा था कि ममता बनर्जी की अराजक राजनीति का अन्त होने जा रहा है। जब चुनाव परिणाम आये तो भगवा लहर में मुस्लिम तुष्टीकरण की पर्याय बन चुकी तृणमूल कांग्रेस का सफाया हो गया और भाजपा को दो तिहाई बहुमत मिला। पश्चिम बंगाल में हिन्दुत्व के पुनर्जागरण के पीछे ऐतिहासिक सन्दर्भों को समझना आवश्यक है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बंगाल का इतिहास सांस्कृतिक और धार्मिक आन्दोलनों से समृद्ध रहा है। स्वामी विवेकानन्द, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, महर्षि अरविन्द, राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ टैगोर और श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे विचारकों और नेताओं ने बंगाल की सांस्कृतिक चेतना को गहरायी से प्रभावित किया। वंदे मातरम् जैसी राष्ट्रवादी भावना यहीं की धरती से ही निकली। हालाँकि स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस, वाम दलों और तृणमूल कांग्रेस के शासन के दौरान राजनीति में वर्ग संघर्ष और मुस्लिम तुष्टीकरण को प्रमुखता मिली। हालाँकि समय के साथ जनसंख्या परिवर्तन, सीमा पार घुसपैठ, साम्प्रदायिक तनाव और तुष्टीकरण की राजनीति ने हिन्दुओं में नयी राजनीतिक चेतना पैदा की।

कांग्रेस का कुशासन

स्वतंत्रता के बाद पश्चिम बंगाल में प्रारम्भिक दशकों तक कांग्रेस का प्रभाव रहा। विभाजन के बाद शरणार्थी संकट, खाद्यान्न समस्या, बेरोजगारी और औद्योगिक अशान्ति ने राज्य को लगातार तनावपूर्ण बनाये रखा। 1960 के दशक में राजनीतिक अस्थिरता तेजी से बढ़ी। इसी दौर में खाद्य आन्दोलन और छात्र आन्दोलनों ने हिंसक रूप लेना आरम्भ किया। पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच संघर्ष आम हो गये। राजनीतिक विरोध को दबाने के लिये पुलिस बल के उपयोग के आरोप लगे। 1967 में दार्जिलिंग जिले से शुरू हुआ नक्सल आन्दोलन पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक निर्णायक मोड़ था। यह आन्दोलन भूमि अधिकार और वर्ग संघर्ष के नाम पर आरम्भ हुआ, लेकिन शीघ्र ही सशस्त्र हिंसा में बदल गया। थानों, सरकारी अधिकारियों और राजनीतिक विरोधियों पर हमले होने लगे। परिणाम स्वरूप 1970 के दशक में कोलकाता

और अन्य क्षेत्रों में पुलिस मुठभेड़ों, गिरफ्तारियों और फर्जी मुठभेड़ों की घटनाएँ बढ़ीं। हजारों युवाओं को गिरफ्तार किया गया। यह दौर पश्चिम बंगाल के राजनीतिक इतिहास का अत्यन्त हिंसक काल रहा।

वाममोर्चे का अराजक शासन

1977 में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया (मार्क्सवादी) के नेतृत्व वाले वाम मोर्चे ने सत्ता सम्भाली। ज्योति बसु और बुद्धदेव भट्टाचार्य के नेतृत्व में वामदलों ने लगभग 34 वर्षों तक सरकार चलायी। इस दौर में सीपीआई (एम) ने गाँव-गाँव, गली-गली स्थानीय गुण्डों के रूप में अपना कैडर खड़ा किया, जिनके इशारे पर पुलिस और अधिकारी काम करने को विवश थे। मुख्यमंत्री के रूप में ज्योति बसु महत्वपूर्ण फाइलें लेकर पार्टी के राज्य सचिव प्रमोद दासगुप्ता के पास जाते थे और दासगुप्ता उन पर अन्तिम निर्णय करते थे। वाम दलों के शासन में आर्केस्ट्रा और लोक मनोरंजन मण्डलियों के नाम पर आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की लड़कियों का हर प्रकार से शोषण होता था। इसी दौर में महिलाओं की बिक्री तक होती थी। ज्योति बसु के शासन में ही कोलकाता में 30 अप्रैल 1982 को आनन्द मार्ग से जुड़े 18 साधुओं को जलाकर मार डाला गया। चुनाव में जो वामदलों के साथ नहीं होता था, उसे मतदान ही नहीं करने दिया जाता था। 2006 में चुनाव पर्यवेक्षक केजे राव ने स्पष्ट कहा था कि केन्द्रीय बलों के बिना यहाँ निष्पक्ष चुनाव नहीं हो सकते। वाम शासन के और भी अनगिनत कुकर्म इसलिये दबे रह गये मीडिया उनकी मुट्ठी में था। लम्बे समय तक चले वाम शासन के प्रभाव ने बंगाल की पारम्परिक सांस्कृतिक संरचना को वैचारिक राजनीति के अधीन कर दिया। कम्युनिस्ट शासन ने हिन्दू सांस्कृतिक प्रतीकों की सार्वजनिक जीवन में उपेक्षा की। बंगाल की मूल सांस्कृतिक आत्मा आध्यात्मिकता और राष्ट्रवाद से जुड़ी थी, लेकिन वामपंथ ने उसे केवल आर्थिक और राजनीतिक संघर्ष तक सीमित कर दिया। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में इतिहास और राजनीति की व्याख्या एक विशेष विचारधारा के अनुरूप प्रस्तुत की गयी। रंगमंच, सिनेमा और बौद्धिक जगत में भी वामपंथी प्रभाव अत्यधिक बढ़ा।

वामपंथी शासन के अन्तिम वर्षों में भूमि अधिग्रहण सबसे बड़ा विवाद बना। सिंगूर में औद्योगिक परियोजना के लिये भूमि अधिग्रहण और नन्दीग्राम में प्रस्तावित रासायनिक हब के खिलाफ बड़े आन्दोलन हुए। 2007 में नन्दीग्राम में पुलिस कार्रवाई और राजनीतिक संघर्ष में कई लोगों की मृत्यु हुई। यही घटनाएँ आगे चलकर सत्ता परिवर्तन का कारण बनीं।

तृणमूल कांग्रेस का जंगलराज

वामदलों के लम्बे शासन का अन्त कर 2011 में ममता बनर्जी के नेतृत्व में

तृणमूल कांग्रेस सत्ता में आई। जनता को आशा थी कि कुछ अच्छा होगा लेकिन कुशासन, अराजकता, हिन्दू विरोध और मुस्लिम तुष्टीकरण में वे कांग्रेस और कम्युनिस्टों से भी आगे निकल गयीं। जो गुण्डे पहले कांग्रेस और वाम दलों के लिये काम करते थे, उन सभी को ममता ने अपनी पार्टी में सम्मिलित कर लिया। तृणमूल शासन के दौरान भी चुनावों में जमकर हिंसा होती थी। पंचायत और स्थानीय निकाय चुनावों में तो विपक्ष अनेक सीटों पर उम्मीदवार ही नहीं उतार पाता था। ममता ने मुस्लिम तुष्टीकरण की सारी सीमाएँ पार कर दीं। बांग्लादेश के लाखों मुस्लिम घुसपैठियों को लाकर न सिर्फ पश्चिम बंगाल का मतदाता बनाया गया बल्कि देश के अन्य भागों में भी भेजा गया। उर्दू को राज्य की दूसरी भाषा बना दिया गया। मुस्लिम कट्टरपंथियों का आतंक इतना अधिक था कि हिन्दू अपने तीज त्योहार तक ठीक से नहीं मना पाते थे।

भाजपा का उदय

2014 के बाद भारतीय जनता पार्टी के उभार के साथ राजनीतिक संघर्ष और तीखा हो गया। राज्य में हिन्दुत्व राजनीति और मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति के बीच टकराव बढ़ा। 2011 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को लगभग चार प्रतिशत मत मिले थे लेकिन मात्र तीन सीटें ही मिली थी। 2016 में उसे लगभग 10 प्रतिशत वोटों के साथ तीन सीटें मिलीं लेकिन 2021 के चुनाव में भाजपा ने लगभग 38 प्रतिशत मतों के साथ 77 सीटें जीत कर यह तय कर दिया कि ममता की आगे की राह आसान नहीं है। 2021 के विधानसभा चुनाव परिणामों के बाद राज्य में व्यापक हिंसा हुई। कई जिलों में भाजपा समर्थकों के घरों पर हमले हुए और हजारों लोगों ने भाग कर असम में शरण ली। यहीं से हिन्दू मतदाताओं ने एकजुट होना आरम्भ किया और जिसका परिणाम 2026 के चुनाव में दिखा जब भाजपा ने लगभग 294 सीटों में से अकेले 46 प्रतिशत वोट प्राप्त कर 207 सीटें जीतीं। तृणमूल कांग्रेस का वोट प्रतिशत मात्र 40 और सीटें 80 रह गयीं। उल्लेखनीय है कि पश्चिम बंगाल में 30 प्रतिशत मुस्लिम और 70 प्रतिशत हिन्दू हैं। इस बार 38 मुस्लिम विधायक चुने गये हैं जिनमें टीएमसी के 32, कांग्रेस के दो व चार अन्य दलों के हैं।

भविष्य की दिशा

पश्चिम बंगाल में हिन्दू मतदाताओं ने अपना काम कर दिया है। अब यह नयी सरकार पर है कि वह अपना कर्तव्य कहाँ तक निभाती है? सबसे बड़ी चुनौती घुसपैठ रोकना और जो घुसपैठिये आ गये हैं, उन्हें बाहर निकालना है। इसके अतिरिक्त विकास, शिक्षा, रोजगार और भ्रष्टाचार के मुद्दे भी अहम होंगे। देखना यह भी होगा कि जो राह बंगाल के हिन्दुओं ने दिखायी है, क्या पूरे देश के हिन्दू उसी राह पर चलेंगे ? क्योंकि कहा जाता है कि आज बंगाल जो सोचता है, भारत कल वही सोचता है।

असम में भी संगठित रहे हिन्दू मतदाता

असम विधानसभा चुनाव में भी हिन्दू मतदाता एक जुट रहे। बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों का मुद्दा यहाँ भी छाया रहा। उल्लेखनीय है कि इस घुसपैठ के चलते ही राज्य की जनसांख्यिकी बदल गयी है। असम में मात्र 65 प्रतिशत हिन्दू बचे हैं और मुसलमान 35 प्रतिशत हो गये हैं। हिन्दुओं के भारी मतदान और एकजुटता से कुल 126 सीटों में से राजग ने 102 जीतीं और 48 प्रतिशत वोट प्राप्त किये। इनमें अकेले भाजपा 38 प्रतिशत वोट पाकर 82 सीटों पर विजयी रही। राज्य की 24 सीटें पूर्णतः मुस्लिम आधिपत्य वाली हो गयी हैं। इनमें से कांग्रेस ने 19 सीटें जीतीं जिनमें 18 मुसलमान हैं। पाँच अन्य सीटें भी मुस्लिम उम्मीदवारों ने जीतीं।

केरल में आशा की किरण

केरल में हिन्दू लगभग 55 प्रतिशत, मुसलमान 27 प्रतिशत और ईसाई 18 प्रतिशत हैं। यहाँ का हिन्दू बँटा होने के कारण कभी वाम दल तो कभी कांग्रेस सरकार बनाती है। वाम दलों की हार से उनका पूरे भारत में सफाया हो गया और अब किसी भी राज्य में इनकी सरकार नहीं है। इस बार मुस्लिम लीग के सहयोग से कांग्रेस सरकार बनाने में सफल रही। यह वही मुस्लिम लीग है जिसने देश का विभाजन कराया था और स्वतंत्रता के बाद भी भारत में राजनीति कर रही है। इस चुनाव में भाजपा 11 प्रतिशत से अधिक वोट प्राप्त कर तीन सीटें जीतने में सफल रही। माना जा रहा है कि यदि हिन्दू वोट पश्चिम बंगाल और असम की तरह एकजुट हुआ तो भविष्य में यहाँ भी भगवा लहरायेगा।

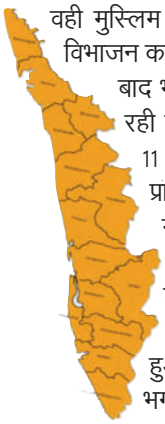

तमिलनाडु में सनातन विरोधी द्रमुक की हार

तमिलनाडु विधानसभा चुनाव की सबसे अहम बात यह रही कि सनातन को मिटाने की बात करने वाली द्रमुक ढेर हो गयी। वहाँ के लोकप्रिय अभिनेता जोजेफ विजय की नयी पार्टी टीवीके 234 सीटों में से 108 सीटें जीत कर सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। द्रमुक से गठबन्धन करने वाली कांग्रेस अपनी सहयोगी की पीठ में छुरा भोंक कर टीवीके के साथ हो गयी। वाम दलों और मुस्लिम लीग का भी समर्थन लेकर विजय मुख्यमंत्री बन गये। तमिलनाडु में हिन्दू 87 प्रतिशत, ईसाई और मुसलमान 6-6 प्रतिशत हैं। यह दुर्भाग्य है कि यहाँ का हिन्दू अभी तक एकजुट नहीं हो पाया। अन्नाद्रमुक से गठबन्धन के कारण भाजपा यहाँ अच्छा नहीं कर पायी। फिर भी पाँच दशक बाद द्रमुक दलों का सत्ता से बाहर होना शुभ संकेत है। ●

अधिमास : आस्था, आत्मशुद्धि का अतिरिक्त अवसर

भारतीय सनातन परम्परा में समय की गणना केवल दिन, तिथि और महीनों का क्रम नहीं है, बल्कि यह प्रकृति, ग्रह-नक्षत्र, ऋतुचक्र और मानव जीवन के सन्तुलन का अद्भुत विज्ञान भी है। इसी वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि का परिणाम है अधिमास, जिसे सामान्यतः मलमास अथवा पुरुषोत्तम मास कहा जाता है। हिन्दू पञ्चाङ्ग में यह वह अतिरिक्त तेरहवाँ महीना है, जो लगभग प्रत्येक तीसरे वर्ष आता है। वर्ष 2026 में अधिमास 17 मई से 15 जून तक रहेगा। अधिमास केवल धार्मिक परम्परा नहीं, बल्कि भारत की उस गहरी खगोलीय समझ का प्रमाण है, जिसमें धर्म और विज्ञान एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक माने गये हैं।

अधिमास का वैज्ञानिक आधार

हिन्दू पञ्चाङ्ग मुख्यतः चन्द्र गणना पर आधारित है। एक चन्द्र वर्ष लगभग 354 दिनों का होता है, जबकि सौर वर्ष लगभग 365 दिन 6 घण्टे का होता है। दोनों में हर वर्ष लगभग 11 दिनों का अन्तर उत्पन्न होता है। यह अन्तर लगभग 32-33 महीनों में बढ़कर एक पूर्ण मास के बराबर हो जाता है, जिसे सन्तुलित करने के लिये एक अतिरिक्त मास जोड़ा जाता है।

शास्त्रीय परिभाषा में कहा गया है-

यस्मिन् मासि न संक्रान्तिः स मासोऽधिमासकः।

ज्योतिषीय सूत्र (परम्परागत पञ्चाङ्ग -निर्णय सिद्धान्त) अर्थात जिस चन्द्र मास में सूर्य संक्रांति न हो, वही अधिमास कहलाता है। यह वही वैज्ञानिक आधार है जो पञ्चाङ्ग को ऋतु और सूर्यगति के अनुरूप सन्तुलित करता है।

धार्मिक दृष्टि और पुरुषोत्तम मास

पुराणों के अनुसार जब यह मास किसी देवता से सम्बद्ध नहीं था, तब इसे मलमास कहा जाता था। बाद में भगवान विष्णु ने इसे स्वीकार कर "पुरुषोत्तम मास" का गौरव दिया। इस भाव को स्कन्दपुराण में इस प्रकार वर्णित किया गया है-

मलिनत्वात् परित्यक्तो मासोऽयं सर्वदेहिभिः।
मया पुरुषोत्तमेनैव स्वीकृतः पुरुषोत्तमः॥
- पद्मपुराण, पुरुषोत्तम माहात्म्य

अर्थात यह मास सबके द्वारा त्याग दिया गया था, तब स्वयं भगवान पुरुषोत्तम ने इसे स्वीकार कर अपना नाम दिया। यह मास भगवान विष्णु की आराधना के लिये अत्यन्त श्रेष्ठ माना गया है।

अधिमास में साधना का महत्व

शास्त्रों में कहा गया है कि इस मास में किया गया जप, तप और दान सामान्य दिनों की अपेक्षा कई गुना फल देता है-

अधिमासे कृतं पुण्यं जपहोमसुरार्चनम्।
तत्सर्वं कोटिगुणितं भवेत् पुरुषोत्तमप्रियात्॥
- स्कन्दपुराण (पुरुषोत्तम मास माहात्म्य)

अर्थात अधिमास में किया गया पुण्य कार्य करोड़ गुना फल देने वाला माना गया है इसलिये विवाह, गृहप्रवेश, नामकरण जैसे मांगलिक कार्य इस अवधि में सामान्यतः स्थगित रखे जाते हैं, जबकि साधना, व्रत और भक्ति को प्रमुखता दी जाती है।

मानसिक और सामाजिक सन्देश

आज के समय में मनुष्य निरन्तर भागदौड़ और उपभोग की संस्कृति में उलझा हुआ है। अधिमास उसे रुकने, सोचने और भीतर देखने का अवसर देता है।

उद्धरेदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥
- श्रीमद्भगवद्गीता 6.5

अर्थात मनुष्य स्वयं ही अपने को ऊपर उठा सकता है और स्वयं ही गिरा भी सकता है। अधिमास इसी आत्म-सुधार की प्रक्रिया का प्रतीक है। इस अवधि में दान, सेवा, गौसेवा, वृक्षारोपण और अन्नदान जैसी गतिविधियाँ समाज में संवेदना और सहयोग की भावना को बढ़ाती हैं।

स्वास्थ्य और जीवनशैली सन्तुलन

अधिमास का समय (मई-जून) अत्यधिक गर्मी, पित्त वृद्धि, जल की कमी और मानसिक थकान का काल होता है इसलिये भारतीय ऋषियों ने इस अवधि में संयमित आहार और उपवास पर विशेष बल दिया।

श्रीकृष्ण द्वारा कहा गया है-

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥
-श्रीमद्भगवद्गीता 6.17

अर्थात सन्तुलित आहार, आचरण और जीवनशैली से सभी दुःखों का नाश होता है।

इसी प्रकार दान की महत्ता-

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्॥
- श्रीमद्भगवद्गीता 17.20

अर्थात उचित समय, पात्र और भावना से दिया गया दान ही श्रेष्ठ माना गया है।

समय का आध्यात्मिक सन्देश

अधिमास यह सन्देश देता है कि जैसे कैलेण्डर को सन्तुलित करने के लिये अतिरिक्त समय आवश्यक होता है, वैसे ही जीवन को सन्तुलित करने के लिये आत्ममंथन और ठहराव भी आवश्यक है। यह केवल धार्मिक महीना नहीं, बल्कि जीवन के पुनर्सन्तुलन का अवसर है। अधिमास भारतीय संस्कृति की उस अद्भुत दृष्टि का प्रतीक है, जिसमें धर्म, विज्ञान और जीवन एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। यह हमें सिखाता है कि समय केवल गणना नहीं, सन्तुलन है धर्म केवल कर्मकाण्ड नहीं, जीवन विज्ञान है और आत्मशुद्धि ही वास्तविक प्रगति है इस प्रकार अधिमास वास्तव में आस्था, खगोल विज्ञान, स्वास्थ्य अनुशासन और आत्मपरिष्कार का एक अद्वितीय संगम है। ●

◆ प्रणय विक्रम सिंह

उदन्त मार्तण्ड : हिन्दी पत्रकारिता के सूर्य का 'द्विशताब्दी' शंखनाद

30 मई 1826... यह केवल एक तिथि नहीं, हिन्दी चेतना के क्षितिज पर उगे उस प्रथम सूर्य का स्मृति-दिवस है, जिसने भारतीय भाषायी अस्मिता के अन्धकार को पहली बार अपने स्वाभिमानी प्रकाश से आलोकित किया। कलकत्ता की औपनिवेशिक गलियों में जब अंग्रेजी सत्ता अपने साम्राज्य का विस्तार कर रही थी, तब उसी शहर से 'उदन्त मार्तण्ड' नामक एक ऐसा पत्र निकला, जिसने भारतीय मन की मौन वेदना को वाणी दी। 'उदन्त' अर्थात समाचार और 'मार्तण्ड' अर्थात सूर्य। यह नाम ही अपने भीतर एक समूचा घोष समेटे हुए था... समाचारों का सूर्य, जनचेतना का सूर्य, हिन्दी स्वाभिमान का सूर्य।

कानपुर की मिट्टी में जन्मे साहसी विद्वान पण्डित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा सम्पादित यह साप्ताहिक पत्र प्रत्येक मंगलवार को प्रकाशित होता था। शुक्ल जी ने शायद तब यह नहीं सोचा होगा कि उनके हाथों से रोपा गया यह छोटा सा पौधा आगे चलकर हिन्दी पत्रकारिता की विराट वटवृक्षीय परम्परा का बीज बन जायेगा।

उस दौर में सत्ता की भाषा अंग्रेजी थी और प्रशासन की भाषा फारसी। हिन्दी बोलने वाला समाज विशाल तो था, किन्तु उसकी पीड़ा, उसकी परम्परा और उसके प्रश्न उपेक्षित थे। पत्रकारिता का आकाश विदेशी और क्षेत्रीय भाषायी पत्रों से भरा था, किन्तु हिन्दी वहाँ अनाथ-सी खड़ी थी। ऐसे समय 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन केवल एक पत्र का आरम्भ नहीं, बल्कि भाषायी पराधीनता के विरुद्ध सांस्कृतिक प्रतिरोध का शंखनाद था।

यह वह समय था जब छापाखाना तकनीक नहीं, विचारों का रणक्षेत्र हुआ करता था। हर छपी हुई पंक्ति सत्ता की आँखों में आँखें डालने का साहस रखती थी। ऐसे समय हिन्दी में समाचार पत्र निकालना किसी दीपक का आँधियों से संघर्ष करने जैसा था। आर्थिक संकट, पाठकों की सीमित संख्या, वितरण की कठिनाइयाँ और अंग्रेजी शासन की उपेक्षा, इन सबके बीच उदन्त मार्तण्ड ने अपनी लौ जलाये रखी। अपनी तपिश कम नहीं होने दी।

किन्तु विडम्बना देखिये, जिस हिन्दी समाज की आवाज बनने के लिये यह पत्र निकला था, अंग्रेजी सत्ता ने उसकी राह में कांटे बिछाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। डाक-व्यवस्था में सहयोग न मिलने और संसाधनों के अभाव के कारण लगभग डेढ़ वर्ष बाद, 4 दिसम्बर 1827 को इसका प्रकाशन बन्द करना पड़ा। परन्तु इतिहास में आयु नहीं, प्रभाव देखा जाता है।

> 'उदन्त मार्तण्ड' का जीवन भले अल्प रहा हो, किन्तु उसकी ज्योति अमर हो गयी। पत्रकारिता केवल समाचार का माध्यम नहीं रही। वह स्वतंत्रता संग्राम की शंखध्वनि बनी, सामाजिक सुधार का स्वर बनी, जनजागरण का जन्तर बनी। स्वाधीनता आन्दोलन के दिनों में हिन्दी पत्रकारिता ने कलम को तलवार बना दिया। अंग्रेजों की बन्दूकें जहाँ शरीरों को घायल करती थीं, वहीं हिन्दी के पत्र साम्राज्यवाद की वैचारिक नींव पर प्रहार करते थे। गणेश शंकर विद्यार्थी का प्रताप, माखनलाल चतुर्वेदी का कर्मवीर, और भारतेन्दु की लेखनी ये सब उसी परम्परा की सन्ततियाँ थीं, जिसकी पहली सांस उदन्त मार्तण्ड ने ली थी।

हिन्दी पत्रकारिता का यह प्रथम सूर्य आगे चलकर एक ऐसे आकाश में बदल गया, जिसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, अज्ञेय, धर्मवीर भारती और अटल बिहारी वाजपेयी जैसे असंख्य नक्षत्र चमके। आज जब 'उदन्त मार्तण्ड' के दो सौ वर्ष (द्विशताब्दी) के पड़ाव के समीप हम खड़े हैं, तब भारत एक नये संचार युग के द्वार पर है। मोबाइल की स्क्रीन ने मुद्रित पन्नों की जगह ले ली है और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) समाचारों की गति तय कर रही है। सूचना का विस्फोट तो हुआ है, परन्तु सत्य का सन्तुलन डगमगा रहा है। खबरें अब तथ्य से अधिक 'एल्गोरिदम' और 'ट्रेंड' का हिस्सा बन गयी हैं।

ऐसे समय 'उदन्त मार्तण्ड' की स्मृति हमें हमारे दायित्व की याद दिलाती है। यह सिखाता है कि पत्रकारिता का मूल उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, समाज को सजग करना है। आज जब हिन्दी को 'हिंग्लिश' बनाने या अनुवाद की बैसाखियों पर टिकाने की कोशिश होती है, तब 'मार्तण्ड' हमें हमारी जड़ों की याद दिलाता है। यह स्मरण कराता है कि हिन्दी केवल संवाद का माध्यम नहीं, भारत की सांस्कृतिक स्मृति की संवाहिका है। हिन्दी पत्रकारिता का यह द्विशताब्दी क्षण आत्ममंथन का अवसर है। प्रश्न यह है कि क्या आज की पत्रकारिता उतनी ही जनपक्षधर है? क्या वह भाषा की आत्मा को बाजार के दबाव से बचा पा रही है? यदि इन प्रश्नों के उत्तर खोजने हैं, तो हमें उस छोटे-से साप्ताहिक पत्र की ओर लौटना होगा, जिसने बिना संसाधनों के भी सत्य की मशाल जलाई थी।

'उदन्त मार्तण्ड' केवल इतिहास का पन्ना नहीं, हिन्दी आत्मा का प्रथम उच्चारण है। वह भारतीय पत्रकारिता के आकाश में उगा वह शाश्वत अरुणोदय है, जिसकी लालिमा आज भी हिन्दी चेतना के क्षितिज को गौरवान्वित कर रही है। ●

● शिव शंकर पाण्डेय

आत्मशुद्धि का भारतीय पर्व गंगा दशहरा

भारत की सांस्कृतिक चेतना में गंगा दशहरा केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, प्रकृति-सम्मान और नैतिक जीवन का सन्देश देने वाला महापर्व है। भारतीय संस्कृति में समय केवल गणना का माध्यम नहीं, बल्कि चेतना का आयाम है। हिन्दू धर्म में तिथियाँ मानव जीवन को ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से जोड़ने वाली आध्यात्मिक कड़ियाँ मानी गयी हैं। गंगा दशहरा ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है।

ज्येष्ठे मलमासे सति तत्रैव दशहरा कार्या, न तु शुद्धे। दशहरासु नोत्कर्षः चतुर्व्वपि युगादिषु।।

यह श्लोक बताता है कि ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को मनाया जाने वाला यह पर्व दस प्रकार के पापों का हरण करता है, इसलिये इसे दशहरा कहा गया है।

गंगा दशहरा की पौराणिक पृष्ठभूमि

यह पर्व उस दिव्य क्षण की स्मृति को जीवन्त करता है, जब राजा भगीरथ की कठोर तपस्या से माँ गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुईं।

भागीरथस्य तपसा प्रसन्ना जाह्नवी शुभा।
शिवजटासु संलीना भूत्वा लोकहिताय वै॥

भारतीय परम्परा में यह मान्यता है कि इस पावन दिन गंगा स्नान, दान, जप, तप और संयम के पालन से मनुष्य के दस प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। इसी कारण इस पर्व को गंगा दशहरा कहा गया है अर्थात् वह पवित्र अवसर, जो मानव जीवन के दस दोषों और पापों का हरण कर उसे शुद्धता, सदाचार और आध्यात्मिक प्रकाश की ओर अग्रसर करे।

भारतीय दर्शन में दस पाप की अवधारणा क्या है?

भारतीय दर्शन में पाप केवल धार्मिक अपराध नहीं, बल्कि वे व्यवहार हैं जो मनुष्य, समाज और प्रकृति के सन्तुलन को बिगाड़ते हैं। ब्रह्मपुराण में वर्णित है कि
ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता।
हरते दश पापानि तस्माद् दशहरा स्मृता।।
शास्त्रों में जिन दस पापों का उल्लेख मिलता है, वे मुख्यतः तीन स्तरों पर विभाजित हैं, शरीर, वाणी और मन के पाप।

स्तर	पाप
शरीर से होने वाले पाप	हिंसा
	चोरी
	कुशील आचरण
वाणी से होने वाले पाप	झूठ बोलना
	कटु वचन बोलना
	चुगली करना
	व्यर्थ एवं अशुभ बातें
मन से होने वाले पाप	लोभ
	द्वेष
	अहंकार एवं दुर्भावना

पूजा-विधि और लोकपरम्परा

गंगा की पूजा के लिये हर सामग्री की संख्या भी 10 ही होती है। इसमें 10 फूल, 10 दीप, 10 फल, 10 मिठायी को रखा जाता है। साथ ही इस दिन 10 प्रकार के दान जैसे जल दान, अन्न दान, घी दान, पूजा या सुहाग सामग्री का दान, तेल का दान, शक्कर का दान, फल का दान, वस्त्र का दान या सामर्थानुसार सोने का दान कर सकते हैं।

गंगा दशहरा के दिन गंगा में स्नान करते समय 10 बार डुबकी लगानी चाहिये।

स्नान करने के लिए ब्रह्म मुहूर्त से लेकर सूर्योदय तक के समय का समय सर्वोत्तम है। इस समय स्नान करने से सूर्य की ऊर्जा से आत्मविश्वास, यश, पद और प्रतिष्ठा मिलती है।

भारतीय साहित्य में गंगा

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में गंगा को "सकल मुद मंगल मूल" कहा है। वहीं कालिदास के काव्य में गंगा स्वर्ग और पृथ्वी के मध्य दिव्य सेतु के रूप में चित्रित होती हैं। भक्तिकालीन सन्तों ने गंगा को केवल नदी नहीं, बल्कि ईश्वर की करुणा का प्रवाह माना। गंगा भारतीय संस्कृति की वह अनश्वर धारा हैं, जिसमें धर्म, दर्शन, लोकजीवन और प्रकृति एक साथ प्रवाहित होते हैं। भारतीय साहित्य में गंगा करुणा, शुद्धि और मुक्ति की प्रतीक रही हैं।

अन्तर्मन में गंगा का अवतरण

गंगा दशहरा हमें स्मरण कराता है कि मनुष्य का वास्तविक तीर्थ बाहर नहीं, उसके भीतर है। जब अन्तर्मन से हिंसा, लोभ, असत्य और अहंकार का अंधकार मिटता है, तभी जीवन में गंगा का वास्तविक अवतरण होता है। गंगा का पवित्र प्रवाह केवल शरीर को नहीं, बल्कि विचारों और चेतना को भी निर्मल करने का सन्देश देता है। यही इस पर्व की सनातन प्रासंगिकता है। ●

● डॉ. धनंजय गुप्ता

बड़े मंगल का भण्डारा : भारतीय अन्नदान परम्परा का जीवन्त उत्सव

"अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्"- उपनिषदों का यह वचन भारतीय संस्कृति के मूल दर्शन को प्रकट करता है। हमारे शास्त्रों में अन्न को केवल भोजन नहीं, बल्कि ब्रह्मस्वरूप माना गया है। यही कारण है कि सनातन परम्परा में अन्नदान को समस्त दानों में श्रेष्ठ और "महादान" की संज्ञा दी गई है। भूखे को भोजन कराना केवल सामाजिक सेवा नहीं, बल्कि ईश्वर की प्रत्यक्ष उपासना माना गया है।

भारतीय जीवनदृष्टि में यह परम्परा अनादि काल से प्रवाहित होती रही है। सतयुग से लेकर वर्तमान कलियुग तक अन्नदान, भण्डारा, लंगर और सामूहिक भोजन की यह संस्कृति निरन्तर समाज को करुणा, समरसता और लोकमंगल का संदेश देती रही है। लखनऊ का प्रसिद्ध "बड़ा मंगल" इसी महान परम्परा का अद्भुत और जीवन्त स्वरूप है।

अन्नदान से लोकमंगल

भारतीय धर्मग्रंथों में अन्न को प्राणियों के जीवन का आधार कहा गया है। भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं-

"अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्॥"

अर्थात मैं ही वैश्वानर रूप में प्राणियों के शरीर में स्थित होकर अन्न को पचाता हूँ। इस दृष्टि से जब किसी भूखे को भोजन कराया जाता है, तब वह केवल मनुष्य का पेट नहीं भरता, बल्कि स्वयं ईश्वर की तृप्ति होती है। यही भाव भारतीय अन्नदान परम्परा की आत्मा है।

सतयुग में अन्नदान की परम्परा

भारतीय पुराणों और महाकाव्यों में सतयुग को धर्म और करुणा का युग कहा गया है। महाभारत तथा श्रीमद्भागवत में वर्णित राजा रन्तिदेव का जीवन अन्नदान की सर्वोच्च परम्परा का प्रतीक माना जाता है। कहा जाता है कि उनके महल में हजारों रसोइये निरन्तर भोजन बनाते थे और कोई भी अतिथि, साधु, याचक अथवा भूखा व्यक्ति बिना भोजन पाये वापस नहीं लौटता था।

राजा रन्तिदेव का यश उनके वैभव से नहीं, बल्कि करुणा और अन्नदान से अमर हुआ। इसी प्रकार राजा शिवि द्वारा प्राणरक्षा के लिये अपने शरीर का मांसदान कर देना तथा राजा हरिश्चन्द्र की दानशीलता भारतीय संस्कृति में त्याग और सेवा के शाश्वत आदर्श हैं।

त्रेता में अन्नदान से लोकसेवा

त्रेता युग में भी अन्नदान की परम्परा अत्यन्त विकसित रूप में दिखायी देती है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार महाराजा दशरथ ने पुत्रकामेष्टि यज्ञ के उपरान्त विशाल भण्डारे का आयोजन कराया। महीनों तक प्रजा, ब्राह्मणों और अतिथियों को भोजन कराया गया तथा अन्न, वस्त्र, गौ और स्वर्ण का दान दिया गया। भारतीय परम्परा में इसे लोककल्याणकारी राजधर्म का उत्कृष्ट उदाहरण माना गया है। इसी युग में शबरी द्वारा भगवान राम को प्रेमपूर्वक बेर अर्पित करना और भारद्वाज ऋषि का दिव्य आतिथ्य भी इस बात का प्रमाण है कि भारतीय संस्कृति में भोजन केवल देह की आवश्यकता नहीं, बल्कि प्रेम और श्रद्धा की अभिव्यक्ति रहा है।

द्वापर युग में अन्नकूट व भण्डारे

द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के साथ अन्नदान और उत्सवी भण्डारों की परम्परा और अधिक व्यापक रूप में दिखाई देती है। भागवत पुराण में वर्णन है कि श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर नन्द बाबा ने समस्त गोकुल में दूध, दही और माखन का वितरण कराया। माता यशोदा स्वयं प्रेमपूर्वक सबको भोजन कराती थीं।

गोवर्धन पूजा के अवसर पर आरम्भ हुई "अन्नकूट" परम्परा आज भी भारतीय समाज में अत्यन्त श्रद्धा के साथ निभायी जाती है। यह सामूहिक भण्डारे और लोकमंगल की उसी प्राचीन भावना का विस्तार है।

महाभारत के सभा पर्व में वर्णित युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के दौरान इन्द्रप्रस्थ में महीनों तक विशाल भण्डारा चला। इसे द्वापर युग का महानतम सामूहिक भोजन आयोजन माना जाता है। वहीं द्रौपदी का अक्षय पात्र इस विश्वास का प्रतीक है कि जहाँ सेवा और श्रद्धा होती है, वहाँ अन्न कभी समाप्त नहीं होता।

सामूहिक भोजन की धर्म-संस्कृति

अन्नदान और भण्डारे की परम्परा केवल सनातन धर्म तक सीमित नहीं रही, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक चेतना के विभिन्न स्वरूपों में समान रूप से विकसित हुई।

सिख धर्म में गुरु नानक देव जी द्वारा आरम्भ की गयी लंगर परम्परा सेवा, समता और मानवता का अद्भुत उदाहरण है। "पहले पंगत, फिर संगत" का सिद्धान्त सामाजिक समानता का व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत करता है। अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में प्रतिदिन लाखों लोग बिना किसी भेदभाव के एक साथ बैठकर भोजन ग्रहण करते हैं।

जैन धर्म में "साधर्मिक वात्सल्य" और "स्वामी वात्सल्य" जैसी परम्पराएँ सामूहिक भोजन और सेवा की भावना को अभिव्यक्त करती हैं। जैन दर्शन में कहा गया है कि "भूख सबसे बड़ी हिंसा है और अन्नदान सबसे बड़ी अहिंसा।"

बौद्ध परम्परा में भी संघदान और पिण्डपात की व्यवस्था करुणा तथा लोकसेवा की भावना पर आधारित है। सम्राट अशोक द्वारा स्थापित अन्नसत्र भारतीय इतिहास में लोककल्याण की उत्कृष्ट मिसाल माने जाते हैं।

लखनऊ और बड़ा मंगल

कलियुग में लखनऊ का "बड़ा मंगल" भारतीय अन्नदान परम्परा का सर्वाधिक जीवन्त उत्सव बनकर सामने आता है। मान्यता है कि

ज्येष्ठ मास के मंगलवार का सम्बन्ध भगवान हनुमान की भगवान श्रीराम से प्रथम भेंट तथा माता सीता की खोज के प्रसंगों से जुड़ा है। इसी कारण ज्येष्ठ मास के मंगलवार विशेष रूप से पूजनीय माने गए।

लखनऊ में बड़े मंगल पर लगने वाले भण्डारे केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और लोकसेवा के महापर्व हैं। यहाँ सड़क किनारे, मंदिरों में, मोहल्लों में और सार्वजनिक स्थलों पर हजारों लोग निःस्वार्थ भाव से प्रसाद वितरण करते हैं। शीतल जल, शरबत, पूड़ी-सब्जी, हलवा और विभिन्न प्रकार के प्रसाद जनसामान्य को वितरित किये जाते हैं।

इतिहासकारों और लखनऊ गज़ेटियर के अनुसार अलीगंज स्थित प्राचीन हनुमान मन्दिर का विशेष सम्बन्ध बड़े मंगल की परम्परा से जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि नवाबी काल में बेगम आलिया ने सन्तान प्राप्ति की मनोकामना पूर्ण होने पर मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया तथा ज्येष्ठ मंगल पर भण्डारे का संकल्प लिया। बाद में नवाब वाजिद अली शाह ने भी इसे संरक्षण प्रदान किया।

बड़े मंगल का दिव्य सन्देश

बड़ा मंगल केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय जीवनदर्शन का उत्सव है। यह हमें सिखाता है कि- अन्न का सम्मान करना चाहिये। भोजन कभी व्यर्थ नहीं करना चाहिये। सेवा और दान में भेदभाव का स्थान नहीं है। सभी प्राणी करुणा और सम्मान के अधिकारी हैं। विनम्रता और प्रेम से किया गया दान ही सच्चा दान है।

जब कोई व्यक्ति बड़े मंगल का प्रसाद ग्रहण करता है, तब वह केवल भोजन नहीं करता, बल्कि भारतीय संस्कृति की हजारों वर्षों पुरानी करुणा, समरसता और लोकमंगल की परम्परा से जुड़ता है। वास्तव में बड़ा मंगल केवल लखनऊ का पर्व नहीं, बल्कि भारतीय आत्मा की उदारता, सेवा और सहअस्तित्व का महोत्सव है। ●

दो मुस्लिमों ने 13 वर्षीय मासूम की आँखें निकाली, गला रेत दिया

आगरा जिले के थाना बसई जगनेर क्षेत्र के गाँव रंधीरपुरा में 13 वर्षीय मासूम अवनी उर्फ छोटू की गाँव के दो मुस्लिम युवकों और उनके साथियों ने तरबूज तोड़ने के विवाद में चाकू से गोदकर हत्या कर दी।

हमले में उसके चेहरे और सिर पर इतने वार किए गए कि पहचान करना मुश्किल हो गया। परिजनों ने बताया कि हमलावरों ने उसकी आँखें तक बाहर निकाल दीं और गला रेत दिया।

मृतक के पिता नरेश कुशवाहा ने बताया कि उन्होंने अपना खेत गाँव के एक मुस्लिम परिवार को बँटाई पर दे रखा था। अवनी घर से खेत की ओर गया था। काफी देर तक वापस न लौटने पर परिवार को चिन्ता हुई। शाम होते-होते घरवालों ने उसकी तलाश शुरू कर दी।

देर शाम उसकी बहन भोला खेतों की तरफ पहुँची तो वहाँ का दृश्य देखकर उसके होश उड़ गये। खेत में अवनी का शव खून से लथपथ पड़ा था। शव के पास एक थैली में तरबूज और एक चाकू भी मिला। बहन के शोर मचाने पर परिवार और गाँव के लोग मौके पर पहुँचे।

परिजनों ने गाँव के युवक सद्दाम, अरशद और उनके साथियों पर हत्या का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि तरबूज तोड़ने गये मासूम को आरोपियों ने घेर लिया और उस पर ताबड़-तोड़ चाकू से हमला कर दिया। बच्चे के चेहरे और गर्दन पर कई गहरे घाव मिले। परिजनों के मुताबिक उसकी आँखें तक बाहर आ गयी थीं।

सात भाई-बहनों में सबसे छोटा था अवनी

अवनी कुशवाहा सात भाई-बहनों में सबसे छोटा था। वह पास के एक स्कूल में कक्षा तीन का छात्र था। परिवार के लोगों का रो-रोकर बुरा हाल है। गाँव के लोग भी इस दर्दनाक घटना से स्तब्ध हैं। ग्रामीणों ने दोषियों को कड़ी सजा देने की माँग की है। वहीं पूरे गाँव में मातम और आक्रोश का माहौल बना हुआ है।

महर्षि पराशर

आप प्राचीन भारत के एक अत्यन्त प्रतिष्ठित ऋषि, महान दार्शनिक और ज्योतिष शास्त्र के स्तम्भ माने जाते हैं। वे सप्तऋषियों की परम्परा से जुड़े हैं और वेदव्यास के पिता थे। उनकी विद्वत्ता और आध्यात्मिक शक्ति के कारण उन्हें 'महर्षि' की उपाधि प्राप्त है। महर्षि पराशर का योगदान केवल आध्यात्म तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने विज्ञान और खगोलशास्त्र में भी अमूल्य ज्ञान दिया। उनके द्वारा रचित बृहद पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ, जो भारतीय ज्योतिष (वेदांग ज्योतिष) का आधार स्तम्भ है। आज भी फलित ज्योतिष के अधिकांश सिद्धान्त इसी ग्रंथ पर आधारित हैं। अठारह पुराणों में सबसे महत्वपूर्ण 'विष्णु पुराण' की रचना महर्षि पराशर ने ही की थी, जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति और वंशावली का विस्तृत वर्णन है। कृषि पराशर उनका कृषि विज्ञान पर एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जो प्राचीन भारत की उन्नत खेती और मौसम विज्ञान को दर्शाता है। महर्षि पराशर शक्ति मुनि के पुत्र और महर्षि वशिष्ठ के पौत्र थे। वे अद्वैत दर्शन के ज्ञाता थे और उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य मानवता को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना था। 'पराशर ऋषि ने न केवल धर्म की स्थापना की, बल्कि उन्होंने समय, नक्षत्र और ग्रहों की गणना के माध्यम से मनुष्य के भाग्य और कर्म के बीच के सम्बन्ध को स्पष्ट किया।' उनकी शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। भारतीय संस्कृति में उन्हें एक ऐसे ऋषि के रूप में याद किया जाता है जिन्होंने ज्ञान की विभिन्न धाराओं-जैसे ज्योतिष, पुराण और कृषि को एक सूत्र में पिरोया। उनका जीवन तपस्या और निरन्तर शोध का प्रतीक है, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ युगों-युगों तक लाभान्वित होती रहेंगी।

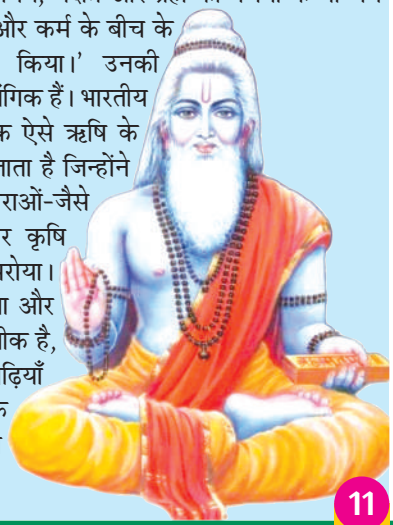

◆ अमित कुमार

वीर मल्हिया पासी

अवध की धरती प्राचीन काल से ही वीरों, लोकनायकों और जनसेवकों की कर्मभूमि रही है। यहाँ की लोकसंस्कृति में ऐसे अनेक व्यक्तित्व मिलते हैं जिन्होंने अपने साहस, संघर्ष और सामाजिक चेतना से समाज को नयी दिशा प्रदान की। इन्हीं लोकनायकों में मल्हौर पासी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे केवल पासी समाज के ही नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिये सम्मान, परिश्रम और स्वाभिमान के प्रतीक माने जाते हैं।

मल्हिया पासी का व्यक्तित्व

उनका व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली और संघर्षशील था। लोककथाओं के अनुसार वे समाज में फैली असमानता और अन्याय के विरोधी थे। उन्होंने अपने साहस और नेतृत्व क्षमता के बल पर लोगों में एकता और आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न की। ग्रामीण समाज में उनका नाम एक ऐसे व्यक्ति के रूप में लिया जाता है जो सदैव सत्य और न्याय के पक्ष में खड़े रहे। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे आम जनता के दुख-दर्द को समझते थे। वे समाज के कमजोर और उपेक्षित वर्गों की सहायता के लिये सदैव तत्पर रहते थे। यही कारण है कि लोगों के बीच उनका सम्मान एक जननायक के रूप में स्थापित हुआ। अवध क्षेत्र की लोकगाथाओं, गीतों और कथाओं में आज भी उनके साहस और संघर्ष का वर्णन सुनने को मिलता है। मल्हौर पासी का जीवन वर्तमान पीढ़ी के लिये भी प्रेरणादायक है। उनका संघर्ष हमें यह सन्देश देता है कि सामाजिक सम्मान और अधिकार प्राप्त करने के लिये साहस, एकता और आत्मविश्वास अत्यन्त आवश्यक हैं। उन्होंने अपने कर्मों से यह सिद्ध किया कि व्यक्ति अपने दृढ़ संकल्प और परिश्रम से समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार मल्हौर पासी उत्तर प्रदेश की लोकपरम्परा के एक ऐसे अमर लोकनायक हैं, जिनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

मल्हिया पासी का संक्षिप्त इतिहास

मल्हिया पासी (जिन्हें राजा मल्हा पासी के नाम से भी जाना जाता है) लखनऊ के पास स्थित मलीहाबाद के संस्थापक और एक प्रतापी पासी राजा थे। लोक कथाओं के अनुसार, मलीहाबाद का नाम उन्हीं के नाम (मल्हिया) पर पड़ा है, जो आज अपनी विश्व प्रसिद्ध दशहरी आम की किस्मों के लिए जाना जाता है। यह भी माना जाता है कि लखनऊ में मल्हौर का नाम मल्हौर पासी/मल्हा पासी के नाम पर पड़ा है। उनके पिता राजा कंस पासी का शासन 1030 ईस्वी के आसपास था, जिन्होंने कसमंडी से काकोरी तक शासन किया। राजा कंस पासी के बाद उनके दोनों पुत्रों, मलीहा पासी (मलीहाबाद के संस्थापक) और सलीहा पासी (सण्डीला के संस्थापक) ने कार्यभार सम्भाला। मल्हौर (या मलीहा) पासी का शासनकाल मुख्य रूप से 11वीं से 14वीं शताब्दी के बीच का माना जाता है। राजा कंस पासी के वंशज और संडीला व मलीहाबाद का गणराज्य 14वीं शताब्दी तक सई और गोमती नदी के दोआब क्षेत्र में फैला रहा। उन्हें महाराजा बिजली पासी (1148-1184 ई.) के समय के आसपास का माना जाता है, जो अवध के एक शक्तिशाली पासी सम्राट थे। 14वीं शताब्दी के अन्त में, दिल्ली के सुल्तान के सेनापतियों (जैसे सैयद मखदूम अलाऊद्दीन) के आक्रमणों के बाद इस क्षेत्र में पासी शासन का प्रभाव कम होने लगा।

ऐतिहासिक उल्लेखों के अनुसार, 1030 ईस्वी के आसपास जब सैयद सालार मसूद गाज़ी (महमूद गजनवी का भांजा) ने अवध क्षेत्र पर आक्रमण किया, तब मल्हिया पासी के पिता राजा कंस पासी ने कसमंडी मलिहाबाद में उसके विरुद्ध भीषण युद्ध लड़ा था। राजा कंस पासी के वीरगति प्राप्त करने के बाद, उनके पुत्रों—मल्हिया पासी और सलीहा पासी ने इस संघर्ष को आगे बढ़ाया और अपने-अपने क्षेत्रों (मलीहाबाद और सण्डीला) की रक्षा के लिये विदेशी आक्रान्ताओं के विरुद्ध मोर्चा सम्भाले रखा। 14वीं शताब्दी के अन्त तक मल्हिया पासी के वंशजों ने दिल्ली के सुल्तानों के सेनापतियों के आक्रमणों का सामना किया, जिसके बाद इस क्षेत्र में पासी शासन का प्रभाव धीरे-धीरे कम हुआ।

संघर्ष व साहस के प्रतीक

मल्हिया पासी का जीवन संघर्ष, परिश्रम और वीरता से परिपूर्ण था। लोककथाओं के अनुसार वे अन्याय और अत्याचार के विरोधी थे तथा सदैव सत्य और न्याय के पक्ष में खड़े रहते थे। उन्होंने अपने साहस और नेतृत्व क्षमता से लोगों में आत्मविश्वास और एकता की भावना जागृत की। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी उनके साहस की कहानियाँ सुनाई जाती हैं।

समाज के प्रति योगदान

मल्हिया पासी केवल एक वीर योद्धा ही नहीं, बल्कि समाज के हितैषी व्यक्ति भी थे। वे गरीबों और कमजोर वर्गों की सहायता के लिये सदैव तत्पर रहते थे। उन्होंने समाज में सम्मान और समानता की भावना को बढ़ावा दिया। यही कारण है कि लोग उन्हें एक लोकनायक के रूप में स्मरण करते हैं। मल्हिया पासी का व्यक्तित्व केवल वीरता तक सीमित नहीं था, बल्कि वे सामाजिक जागरुकता और जनकल्याण की भावना से भी जुड़े हुए थे।

लोकपरम्परा में स्थान

अवध की लोकगाथाओं, गीतों और जनश्रुतियों में मल्हिया पासी का विशेष स्थान है। उनकी वीरता और संघर्ष की कथाएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनायी जाती रही हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों में भी उनके नाम का आदरपूर्वक उल्लेख किया जाता है। मल्हिया पासी के जीवन और विचारों में आत्मसम्मान, साहस और संघर्ष की भावना स्पष्ट रूप से दिखायी देती है। वे मानते थे कि आत्मसम्मान ही मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है, इसलिये व्यक्ति को कभी भी अपने सम्मान और अधिकारों से समझौता नहीं करना चाहिये। ●

हिन्दू मन्दिर है भोजशाला : उच्च न्यायालय

मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने धार जिले में स्थित भोजशाला को हिन्दू मन्दिर माना है। अदालत ने अपने फैसले में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की रिपोर्ट को अहम आधार बनाया। रिपोर्ट में यह सामने आया कि मौजूदा ढाँचे से पहले वहाँ एक भव्य मन्दिर और शिक्षा केन्द्र मौजूद था। इसके एक नहीं अनेक साक्ष्य मिले। भोजशाला माँ वाग्देवी यानी देवी सरस्वती का प्राचीन मन्दिर था, जहाँ लम्बे समय से पूजा होती रही है। वहीं मुस्लिम पक्ष इसे कमाल मौला मस्जिद बताता रहा, लेकिन कोर्ट ने पुरातात्विक साक्ष्यों और ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर उनके दावों को खारिज कर दिया।

सर्वे और खुदाई में मिले अभिलेख व मन्दिर अवशेष

भोजशाला में वर्तमान स्मारक का से सर्वे हुआ, उत्खनन कार्य हुआ और स्मारक में सफाई की गयी। इस दौरान वर्तमान स्मारक पर लगे दो अभिलेख मिले, जिन पर प्राकृत और संस्कृत भाषा की लिखावट मिली।

हिन्दू मन्दिर और अध्ययन केन्द्र होने के मिले प्रमाण

यहाँ हिन्दू मन्दिर के साथ-साथ अध्ययन केन्द्र होने के भी प्रमाण मिले हैं। वहाँ स्मारक की दीवारों पर मन्दिर के अवशेष, खण्डित मूर्तियाँ लगी मिली हैं। इससे पता चलता है कि वहाँ का वर्तमान निर्माण से पहले भी कोई हिन्दू निर्माण था, जिसे तोड़कर उसके अवशेष वर्तमान निर्माण में उपयोग किये गये।

क्या है भोजशाला?

धार जिले में स्थित भोजशाला भारत की प्राचीन सांस्कृतिक और शैक्षणिक धरोहरों में से एक है। माना जाता है कि इसका निर्माण परमार वंश के महान राजा भोज ने कराया था। इतिहासकारों के अनुसार यह स्थान संस्कृत शिक्षा, साहित्य और विद्या का बड़ा केन्द्र था। यहाँ माँ सरस्वती की पूजा होती थी और विद्वान शिक्षा प्राप्त करने आते थे।

भोजशाला को देवी वाग्देवी का मन्दिर है। कई ऐतिहासिक अभिलेखों में भी इसका उल्लेख मिलता है। यहाँ पायी गयी मूर्तियाँ, स्तम्भ और

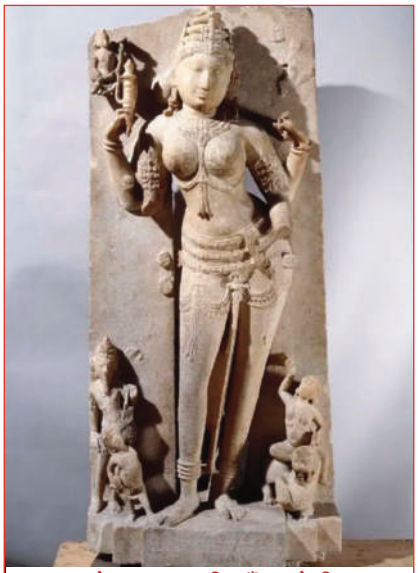
भोजशाला की माँ वाग्देवी

शिलालेख भारतीय स्थापत्य कला की अनोखी पहचान माने जाते हैं।

राजा भोज व भोजशाला का सम्बन्ध

राजा भोज को भारतीय इतिहास के सबसे विद्वान और कला प्रेमी शासकों में गिना जाता है। उन्होंने शिक्षा, साहित्य और वास्तुकला को बढ़ावा दिया। 11वीं शताब्दी में भोजशाला ज्ञान और संस्कृति का प्रमुख केन्द्र थी।

हाईकोर्ट का फैसला क्यों महत्वपूर्ण है?

मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने मामले की सुनवाई के दौरान कई अहम टिप्पणियाँ कीं। अदालत ने पुरातात्विक तथ्यों और ऐतिहासिक रिकॉर्ड को गम्भीरता से देखा। फैसले में यह कहा गया कि वर्तमान ढाँचा मन्दिरनुमा संरचना प्रतीत होता है। अदालत ने केन्द्र सरकार और सम्बन्धित विभागों को भी निर्देश दिये कि ऐतिहासिक धरोहर की सुरक्षा सुनिश्चित की जाये। फैसले के बाद हिन्दू संगठनों में खुशी है।

इतिहासकार बताते हैं कि यहाँ संस्कृत पढ़ायी जाती थी और विद्वानों की सभाएँ होती थीं। माँ सरस्वती की प्रतिमा यहाँ स्थापित थी, जिसे बाद में अंग्रेज शासन के दौरान संग्रहालय में ले जाया गया।

विवाद कैसे शुरू हुआ?

भोजशाला को लेकर विवाद नया नहीं है। हिन्दू समाज इसे मन्दिर मानता है, जबकि मुस्लिम समाज इसे कमाल मौला मस्जिद बताता है। समय के साथ यह विवाद अदालत तक पहुँच गया। कई हिन्दू संगठनों का कहना है कि मन्दिर संरचना को बाद में मस्जिद के

रूप में इस्तेमाल किया गया। वहीं मुस्लिम पक्ष का कहना है कि यहाँ लम्बे समय से नमाज अदा होती रही है।

विवाद बढ़ने के बाद प्रशासन ने दोनों पक्षों के लिये अलग-अलग दिन तय किये थे। हिन्दू समाज को पूजा की अनुमति और मुस्लिम समाज को नमाज की व्यवस्था दी गयी थी। हालाँकि यह व्यवस्था लगातार विवाद का कारण बनी रही।

एएसआई सर्वे में क्या मिला?

हाल ही में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने भोजशाला परिसर का सर्वे किया। सर्वे में कई ऐसे साक्ष्य मिले जो हिन्दू मन्दिर से जुड़ा है। सर्वे में देवी-देवताओं की आकृतियाँ, संस्कृत शिलालेख, मन्दिर शैली के स्तम्भ और मूर्तिकला के प्रमाण सामने आये। कई दीवारों व पत्थरों पर हिन्दू चिन्ह भी मिले।

माँ वाग्देवी की प्रतिमा का महत्व

भोजशाला से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण बात माँ वाग्देवी यानी सरस्वती की प्रतिमा है। कहा जाता है कि यह प्रतिमा बेहद प्राचीन और दुर्लभ है। अंग्रेज काल में इसे धार से बाहर ले जाया गया और बाद में संग्रहालय में रखा गया। हिन्दू संगठनों की माँग है कि प्रतिमा को वापस भोजशाला लाया जाये। इससे ऐतिहासिक और धार्मिक पहचान फिर से स्थापित होगी।

विरासत के रूप में भोजशाला

भोजशाला केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और शिक्षा की पहचान भी है। यहाँ की वास्तुकला, नक्काशी और शिल्प कला आज भी लोगों को आकर्षित करती है।

मुस्लिम पक्ष को अलग से जमीन

कोर्ट ने मुस्लिम पक्ष को नमाज के लिये धार जिले में अलग जमीन के लिए सरकार से सम्पर्क करने के लिए छूट दी गयी है। इसके साथ ही कोर्ट ने केन्द्र सरकार और एएसआई को भोजशाला परिसर के प्रबन्धन और संस्कृत शिक्षा से जुड़े फैसले लेने को कहा है।

एएसआई परिसर का समग्र प्रशासन और प्रबन्धन जारी रखेगा। लेकिन अब हिन्दू पक्ष का मानना है कि की कोई हमारे घर पर आकर कब्जा कर ले और उसे घर खाली करने की आवाज में दूसरी जगह घर देना उचित नहीं है। इसी तरह हमारे इतिहास में और एएसआई सर्वे में स्पष्ट हुआ है कि यहाँ मन्दिर था, तो मुस्लिम पक्ष को दूसरी जगह जमीन देना उचित नहीं होगा। ●

धार्मिक टैटू हटवाने के विरुद्ध हिन्दू संगठनों का विरोध प्रदर्शन

गजियाबाद। सेन्ट टेरेसा पब्लिक स्कूल में उस समय हंगामा हो गया जब महिला पीटीआई ने स्वयं पर धार्मिक टैटू हटवाने व स्कूल प्रशासन पर मतान्तरण का दबाव बनाने का आरोप लगाया। पब्लिक स्कूल प्रशासन पर छात्रों को चर्च ले जाकर ब्रेनवाश करने, हाथों में बन्धे कलावे काटने व माथे पर तिलक लगाने पर रोक जैसे गम्भीर आरोप भी सामने आये हैं।

जानकारी होने पर हिन्दू संगठन भड़क उठे व स्कूल परिसर में जोरदार विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। गेट पर जयश्रीराम लिखकर प्रदर्शनकारियों ने हनुमान चालीसा का पाठ किया।

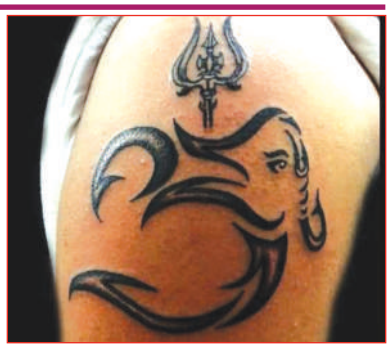

अयोध्या से जुड़ेगा दशरथ समाधि स्थल

अयोध्या। रामनगरी में धार्मिक पर्यटन और बुनियादी ढाँचे को नई दिशा देने के लिये प्रस्तावित दशरथ पथ परियोजना तीव्रता से आकार ले रही है। लगभग 15 किमी लम्बा यह कॉरिडोर दशरथ समाधि स्थल को सीधे शहर से जोड़ते हुए श्रद्धालुओं के लिये एक सुगम मार्ग तैयार करेगा। यह मार्ग एनएच-27 स्थित साकेत पेट्रोल पम्प से शुरू होकर बिल्हरी घाट तक जायेगा। परियोजना के अन्तर्गत सड़क को फोर लेन मानकों के अनुरूप विकसित किया जा रहा है। दशरथ समाधि तक जाने वाले मार्ग को 24 मीटर चौड़ा किया जा रहा है। इस पूरे कॉरिडोर को नव्य अयोध्या से जोड़ने की तैयारी भी की जा रही है। इस मार्ग के विकसित होने से आजमगढ़, बलिया, बिहार और पश्चिम बंगाल की ओर से आने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा मिलेगी। वे पूरा बाजार होते हुए सीधे अयोध्या पहुँच सकेंगे और बिना किसी जाम के दशरथ समाधि स्थल के दर्शन-पूजन कर सकेंगे।

30 भव्य स्तम्भ स्थापित किये जायेंगे – दशरथ पथ को केवल यातायात का माध्यम नहीं अपितु एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अनुभव के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसके डिवाइडर पर 30 भव्य स्तम्भ स्थापित किए जायेंगे जिनमें 15 हस्त मुद्रा और 15 शस्त्र मुद्रा की कलात्मक झलक देखने को मिलेगी।

● अमन दुबे

सांस्कृतिक राष्ट्रचेतना के सन्त महन्त अवैद्यनाथ

भारतीय सभ्यता का इतिहास केवल राजाओं, साम्राज्यों और युद्धों का इतिहास नहीं है, बल्कि वह उन सन्तों, विचारकों और सामाजिक नेतृत्वकर्ताओं की परम्परा का भी इतिहास है जिन्होंने समय-समय पर समाज की चेतना को जागृत करने का कार्य किया। आधुनिक भारत में महन्त अवैद्यनाथ ऐसे ही सन्त-पुरुषों में गिने जाते हैं, जिन्होंने हिन्दू समाज के सांस्कृतिक पुनर्जागरण, संगठन और आत्मबोध को अपने सार्वजनिक जीवन का केन्द्र बनाया। उनका जीवन आध्यात्मिक साधना, सामाजिक सक्रियता और राष्ट्रीय चेतना का अद्भुत समन्वय था। 28 मई को मनायी जाने वाली उनकी जयन्ती केवल एक सन्त के जन्मदिवस का स्मरण नहीं, बल्कि उस वैचारिक और सांस्कृतिक चेतना का स्मरण भी है जिसके लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया।

महन्त अवैद्यनाथ उस सन्त परम्परा के प्रतिनिधि थे जिसने धर्म को समाज से पृथक नहीं माना। उनके विचार में धर्म केवल व्यक्तिगत आस्था या पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह समाज की सांस्कृतिक स्मृति, नैतिक आधार और राष्ट्रीय जीवन का भी केन्द्र होता है। यही कारण था कि उन्होंने अपने जीवन को केवल मठ और मन्दिरों की सीमाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज के भीतर सांस्कृतिक आत्मविश्वास और संगठन की भावना को जागृत करने का निरन्तर प्रयास किया।

सांस्कृतिक चेतना और हिन्दू जागरण का स्वर

गोरखनाथ पीठ की परम्परा सदियों से भारतीय समाज में लोकजागरण, साधना और सेवा का केंद्र रही है। महन्त अवैद्यनाथ ने इस परम्परा को आधुनिक भारत की वैचारिक चुनौतियों के अनुरूप नया विस्तार प्रदान किया। उन्होंने यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया कि यदि कोई समाज अपनी ऐतिहासिक स्मृतियों, परम्पराओं और सांस्कृतिक मूल्यों से कट जाता है, तो धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास भी कमजोर होने लगता है।

उनके सार्वजनिक जीवन का मूल स्वर हिन्दू जागरण था। वे भारत को केवल एक राजनीतिक राष्ट्र-राज्य नहीं, बल्कि एक प्राचीन सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में देखते थे जिसकी आत्मा सनातन परम्परा में निहित है। उनके भाषणों और आन्दोलनों में भारतीय सभ्यता की निरन्तरता, सांस्कृतिक अस्मिता और राष्ट्रीय आत्मबोध का स्वर प्रमुखता से दिखायी देता था। उन्होंने हिन्दू समाज को उसकी जड़ों से जोड़ने, उसमें आत्मगौरव की भावना जगाने और सामाजिक एकात्मता को मजबूत करने का कार्य किया।

महन्त अवैद्यनाथ यह मानते थे कि सांस्कृतिक चेतना के बिना राष्ट्रीय चेतना अधूरी है इसलिये उन्होंने केवल धार्मिक आयोजनों तक स्वयं को सीमित नहीं रखा, बल्कि शिक्षा, सामाजिक संवाद और जनजागरण के माध्यम से समाज को संगठित करने का प्रयास किया। पूर्वांचल सहित उत्तर भारत के व्यापक क्षेत्र में उनका प्रभाव इसी कारण गहरायी से अनुभव किया जाता था।

राम जन्मभूमि आन्दोलन और सांस्कृतिक पुनर्स्थापना

राम जन्मभूमि आन्दोलन महन्त अवैद्यनाथ के सार्वजनिक जीवन का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अध्याय रहा। वे उन प्रमुख सन्तों में थे जिन्होंने इस आन्दोलन को व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। उनके लिए यह केवल किसी मंदिर के निर्माण का विषय नहीं था, बल्कि भारतीय समाज की ऐतिहासिक स्मृति, सांस्कृतिक सम्मान और सभ्यतागत चेतना का प्रश्न था।

उन्होंने सन्त समाज को संगठित करने, धर्मसभाओं के माध्यम से जनमत तैयार करने और आंदोलन को जनमानस तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। उस समय जब यह विषय सीमित दायरे में देखा जा रहा था, महन्त अवैद्यनाथ ने इसे भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता के व्यापक प्रश्न के रूप में प्रस्तुत किया। उनके नेतृत्व और प्रयासों ने इस आन्दोलन को केवल धार्मिक आन्दोलन न रहने देकर सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अभियान का स्वरूप प्रदान किया।

उनका मानना था कि किसी समाज की सांस्कृतिक पहचान उसके प्रतीकों, तीर्थों और ऐतिहासिक स्मृतियों से निर्मित होती है। यदि समाज अपने प्रतीकों के प्रति सम्मान खो देता है तो उसका सांस्कृतिक आधार भी कमजोर होने लगता है। इसी दृष्टि से उन्होंने राम जन्मभूमि आन्दोलन को भारतीय आत्मसम्मान और सांस्कृतिक पुनर्स्थापना का विषय माना।

सन्त परम्परा से राष्ट्रीय चेतना तक

महन्त अवैद्यनाथ की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने सन्त परम्परा को राष्ट्रीय जीवन और सामाजिक प्रश्नों से जोड़ा। सामान्यतः सन्त जीवन को केवल आध्यात्मिक क्षेत्र तक सीमित माना जाता है, किन्तु उन्होंने यह स्थापित करने का प्रयास किया कि धर्म और समाज एक-दूसरे से पृथक नहीं हो सकते। उनके लिए आध्यात्मिकता का अर्थ समाज से विमुख होना नहीं, बल्कि समाज को दिशा देना था।

वे सार्वजनिक जीवन और राजनीति में भी सक्रिय रहे, किन्तु उनकी राजनीति सत्ता-केन्द्रित राजनीति नहीं थी। उसका मूल स्वर सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय आत्मबोध और हिन्दू समाज के संगठन से जुड़ा हुआ था। संसद में रहते हुए भी उन्होंने सांस्कृतिक और धार्मिक विषयों को प्रमुखता से उठाया। वे मानते थे कि भारत की राष्ट्रीय एकता उसकी सांस्कृतिक एकता से ही मजबूत हो सकती है। उनके व्यक्तित्व में सन्त की गम्भीरता, विचारक की स्पष्टता और जननेता की सक्रियता का अद्भुत सन्तुलन दिखायी देता था। वे परम्परा के प्रतिनिधि होते हुए भी अपने समय की चुनौतियों को समझते थे और उसी अनुरूप समाज को संगठित करने का प्रयास करते थे। उनके जीवन का सबसे बड़ा सन्देश यही था कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण केवल अतीत का गौरवगान नहीं, बल्कि समाज को आत्मविश्वास, संगठन और दिशा प्रदान करने की सतत प्रक्रिया है। ●

बिना दवा कब्ज दूर करने के असरदार तरीके

आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी, गलत खानपान, कम पानी पीना और घण्टों बैठे रहना कब्ज की बड़ी वजह बन गये हैं। कब्ज केवल पेट साफ न होने की समस्या नहीं है, बल्कि इससे गैस, सिरदर्द, भूख कम लगना, आलस्य और कई बार बवासीर जैसी परेशानियाँ भी शुरू हो जाती हैं। कई लोग तुरन्त दवा का सहारा लेते हैं, लेकिन रोजमर्रा की कुछ अच्छी आदतें और देसी उपाय कब्ज से लम्बे समय तक राहत दिला सकते हैं। आयुर्वेद में भी पेट को शरीर की जड़ माना गया है। पाचन ठीक रहे तो शरीर स्वस्थ रहता है। ऐसे में कब्ज को नजरअन्दाज करने के सही उपाय अपनाना जरूरी है।

सुबह खाली पेट गुनगुना पानी

कब्ज दूर करने का सबसे आसान और असरदार देसी तरीका सुबह उठते ही गुनगुना पानी पीना है। इससे आंतें सक्रिय होती हैं और पेट साफ होने में मदद मिलती है। चाहें तो इसमें आधा नींबू और थोड़ा शहद भी मिला सकते हैं। यह पाचन को मजबूत करता है और शरीर को डिटॉक्स करने में मदद करता है।

त्रिफला चूर्ण का सेवन

आयुर्वेद में त्रिफला को पेट के लिये बेहद लाभदायक माना गया है। रात में सोने से पहले एक चम्मच त्रिफला चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लेने से सुबह पेट आसानी से साफ हो जाता है। यह आँतों की सफायी करता है और कब्ज की पुरानी समस्या में भी राहत देता है।

फाइबर युक्त भोजन बढ़ाएँ

हरी सब्जियाँ, सलाद, फल और साबुत अनाज कब्ज दूर करने में मदद करते हैं। पपीता, अमरूद, सेब, नाशपाती और अंजीर जैसे फल पेट के लिये बहुत अच्छे माने जाते हैं। खाने में चोकर वाला आटा और दालें शामिल करने से भी पाचन बेहतर रहता है।

रात में दूध और घी

कब्ज की समस्या ज्यादा रहती है तो रात को सोने से पहले एक गर्म दूध में एक या दो चम्मच देसी घी मिलाकर पीना फायदेमन्द होता है। यह आँतों को चिकनायी देता है और सुबह मल त्याग आसान बनाता है। यह उपाय खासतौर पर बुजुर्गों के लिये लाभकारी माना जाता है।

इसबगोल की भूसी का उपयोग

इसबगोल कब्ज के लिए काफी लोकप्रिय घरेलू उपाय है। रात में सोने से पहले एक या दो चम्मच इसबगोल गुनगुने पानी या दूध के साथ लेने से पेट साफ रहता है। यह आँतों में फाइबर बढ़ाकर मल को नरम बनाता है। हालाँकि इसका सेवन करते समय पर्याप्त पानी पीना जरूरी है।

किशमिश और अंजीर का सेवन

सूखी किशमिश और अंजीर को रातभर पानी में भिगोकर सुबह खाने से कब्ज में राहत मिलती है। इनमें प्राकृतिक फाइबर भरपूर मात्रा में होता है जो पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है। बच्चों और बुजुर्गों के लिये यह उपाय काफी लाभकारी माना जाता है।

नियमित व्यायाम और योग

कब्ज का एक बड़ा कारण शारीरिक गतिविधि की कमी भी है। रोजाना 30 मिनट टहलना, योग और हल्का व्यायाम पाचन तंत्र को बेहतर बनाता है। पवनमुक्तासन, भुजंगासन व वज्रासन जैसे योगासन कब्ज दूर करने में मददगार होता हैं।

ज्यादा पानी पीने की आदत डालें

कम पानी पीने से शरीर में डिहाइड्रेशन होता है और मल सख्त हो जाता है। दिनभर में कम से कम 8 से 10 गिलास पानी जरूर पीना चाहिये। गर्मियों में पानी की मात्रा और बढ़ा देनी चाहिये। नारियल पानी और छाछ भी पाचन के लिये लाभदायक होते हैं।

चाय-कॉफी और जंक फूड कम करें

तली-भुनी चीजें, फास्ट फूड और ज्यादा चाय-कॉफी कब्ज को बढ़ा सकते हैं। बाजार के प्रोसेस्ड फूड में फाइबर कम और तेल-मसाले ज्यादा होते हैं, जिससे पाचन खराब होता है। ऐसे भोजन से दूरी बनाकर घर का हल्का और पौष्टिक खाना खाना चाहिये।

समय पर खाना व पर्याप्त नींद जरूरी

अनियमित दिनचर्या भी कब्ज की वजह बनती है। देर रात खाना, समय पर न सोना और तनाव लेना पाचन को प्रभावित करता है। कोशिश करें कि भोजन समय पर करें और कम से कम 7 से 8 घण्टे की नींद लें। तनाव कम करने से भी पेट की समस्या में सुधार होता है।

मेथी का पानी

मेथी के दानों में भरपूर फाइबर और पाचन सुधारने वाले गुण पाये जाते हैं। रात में एक चम्मच मेथी दाना पानी में भिगो दें और सुबह खाली पेट इसका पानी पी लें। चाहें तो भीगे हुए दाने भी चबा सकते हैं। इससे आँतों की सफाई बेहतर होती है और मल नरम बनता है, जिससे कब्ज की समस्या में राहत मिलती है। नियमित सेवन पेट को स्वस्थ रखने और गैस-अपच कम करने में भी मददगार माना जाता है।

कब डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी

अगर कब्ज लम्बे समय तक बना रहे, पेट में तेज दर्द हो, मल में खून आये या वजन तेजी से कम होने लगे तो तुरन्त डॉक्टर से सम्पर्क करना चाहिये। कई बार कब्ज किसी गम्भीर बीमारी का संकेत भी हो सकता है। बिना सलाह के लगातार दवाओं का सेवन करना नुकसानदायक हो सकता है। ●

लाभदायक है केले की खेती

केला एक अत्यन्त लोकप्रिय व स्वास्थ्यवर्धक फल है जिसकी खेती भारत के अधिकांश हिस्सों मे होती है। उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य में केले की खेती कुशीनगर, गोरखपुर, बलिया, देवरिया, महाराजगंज, बस्ती, संतकबीर नगर, अयोध्या, अम्बेडकरनगर, अमेठी और बाराबंकी जैसे कई जिलों में हो रही है। सरकार एकीकृत बागवानी मिशन के अन्तर्गत केले की खेती का विस्तार व उसे लोकप्रिय बनाने के लिये प्रति हेक्टेयर केले की खेती पर लगभग 38 हजार रुपये का अनुदान दे रही है। केले की खेती को प्रोत्साहित करने के लिये सरकार ने केले की खेती को कुशीनगर का "एक जिला एक उत्पाद" भी घोषित किया है। केन्द्र में वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार आने के बाद किसानों की आय दोगुनी करने के लिये कई योजनाएँ आयी हैं। वर्ष 2013 में भारत से कुल 2.7 करोड़ अमेरिकी डॉलर मूल्य के केले का निर्यात हुआ था। 2023- 24 में यह बढ़कर 25.14 करोड़ अमेरिकी डॉलर हो गया है। प्रदेश सरकार के प्रोत्साहन से केले के रकबे में लगातार वृद्धि हो रही है। प्रदेश के किसानों के बीच भी केले की खेती तेजी से लोकप्रिय हो रही है। इसका कारण है कम समय में अधिक लाभ और वर्ष भर इसकी माँग बने रहना। राज्य के पूर्वांचल और अवध क्षेत्र में कई जिलो में यह खेती विकल्प बनकर उभरी है।

सरकारी सहायता व योजनाएँ

भारत सरकार राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अन्तर्गत केले की खेती करने के लिये 40 से 50 प्रतिशत तक सब्सिडी देती है। साथ ही केले की ड्रिप सिंचायीं के लिये भी राज्यों में 80 प्रतिशत तक छूट मिलती है। इसके लिये जिला कृषि कार्यालय व पीएम किसाान पोर्टल पर जाकर समस्त जानकारी ली जा सकती है।

कैसे मिलेगा योजना का लाभ?

प्रदेश में केले की खेती करने के लिए सरकारी सहायता हेतु किसानों को उद्यान विभाग में जाकर पंजीकरण कराना होगा। पंजीकरण कराने के लिये आधार कार्ड, बैंक पासबुक, खतौनी और किसान को अपने दो फोटो देने होंगे। उसके बाद किसान भारत सरकार की ओर से टिश्यू कल्चर केले के लिये अनुमोदित संस्था से पौध खरीद कर लगा सकते हैं। खरीदी हुई पौध का बिल जिला उद्यान कार्यालय में किया जाता है। इसके बाद अनुदान की राशि किसानों के खाते मे भेज दी जाती है। किसान उत्तर प्रदेश उद्यान विभाग द्वारा चयनित फर्म से भी पौध खरीद कर लगा सकते हैं।

राज्य औद्यानिक मिशन के अन्तर्गत किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिये लाभकारी कृषि उत्पादन के लिये पहले प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसके अन्तर्गत किसानों को पौधे उपलब्ध कराये जायेंगे और फिर आधुनिक तकनीक से पौधे खेत में रोपे जायेंगे। केले की एक हेक्टेयर खेती में प्रदेश सरकार की ओर से 40 प्रतिशत अनुदान दिया जायेगा। इस पूरी प्रक्रिया मे जिला उद्यान विभाग भी सहभागी रहता है। वर्तमान समय मे केले का व्यापार एक लाभकारी व्यापार है। कई किसान केले की खेती के माध्यम से आत्मनिर्भर हो चुके हैं।

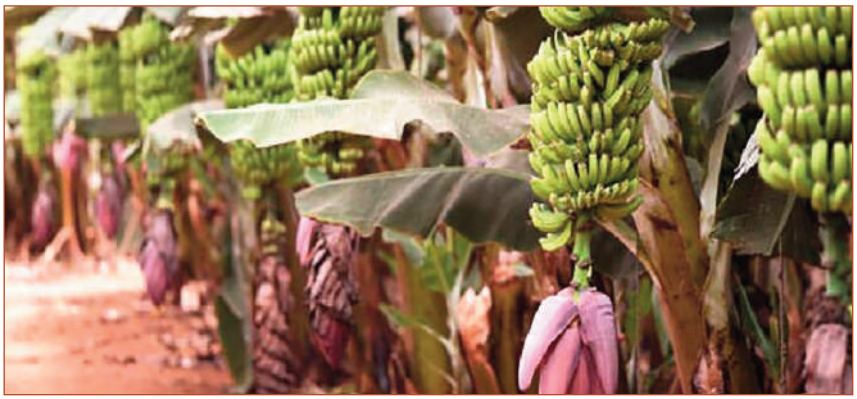

धार्मिक व स्वास्थ्य दृष्टि से महत्व

केले का धर्मिक और स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत महत्व है। केला स्नायु को पोषित करता है और शक्ति प्रदान करता है। केले में पोटैशियम कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, एण्टीआक्सीडेण्ट और विटामिन बी-6 शामिल है जो हृदय स्वास्थ्य और रक्तचाप प्रबन्धन में सहायक होते हैं। केला शरीर को मजबूत बनाता है। दूध के साथ केला खाने से पेट के रोगों में आराम मिलता है।

केले की खेती करने के लिये सरकारी अनुदान प्राप्त करने के लिये ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों ही प्रकार से आवेदन कर सकते हैं। किसानों को ऑनलाइन आवेदन करने के लिये पोर्टल पर जाकर माँगी गयी जानकारियाँ भरनी होंगी- जैसे आधार नम्बर, बैंक विवरण, खसरा व खतौनी आदि। फार्म सबमिट हो जाने के बाद आवेदन संख्या नोट कर सुरक्षित रख लें। स्वीकृति के बाद किसान को भारत सरकार व राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित संस्था से टिश्यू कल्चर केले के पौधे खरीदने होते हैं। खरीदी का बिल वेबसाइट पर उपलब्ध करना होता है। सत्यापन पूरा होने पर अनुदान राशि किसान के खाते में पहुँच जाती है। जो किसान ऑनलाइन फार्म नही भर सकते वह जिला उद्यान केंद्र जाकर आवेदन कर सकते हैं। प्रदेश में केले की खेती न केवल किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रही है अपितु पर्यावरण के अनुकूल भी साबित हो रही है। ●

साधु और चूहा

महिलरोपयम नामक शहर के पास भगवान शिव का एक मन्दिर था। वहाँ एक पवित्र ऋषि रहते थे और मन्दिर की देखभाल करते थे। वे भिक्षा के लिये शहर में हर रोज जाते थे, और भोजन के लिये शाम को वापस आते थे। वे अपनी आवश्यकता से अधिक एकत्र कर लेते थे और बाकि का बर्तन में डाल कर गरीब मजदूरों में बाँट देते थे जो बदले में मन्दिर की सफाई करते थे और उसे सजावट का काम किया करते थे। उसी आश्रम में एक चूहा भी अपने बिल में रहता था और हर रोज कटोरे में से कुछ न कुछ भोजन चुरा लेता था।

जब साधु को एहसास हुआ तो उन्होंने इसे रोकने के लिये सभी तरह की कोशिशें की। उन्होंने कटोरे को काफी उँचाईं पर रखा ताकि चूहा वहाँ तक पहुँच न सके, और यहाँ तक कि एक छड़ी के साथ चूहे को मार भगाने की भी कोशिश की, लेकिन चूहा किसी भी तरह कटोरे तक पहुँचने का रास्ता ढूँढ लेता और कुछ भोजन चुरा लेता।

एक दिन, एक भिक्षुक मन्दिर की यात्रा करने के लिये आये थे। लेकिन साधु का ध्यान तो चूहे को डण्डे से मारने में था और वे भिक्षुक से मिल भी नहीं पाये, इसे अपना अपमान समझ भिक्षुक क्रोधित होकर बोले "आपके आश्रम में फिर कभी नहीं आऊँगा क्योंकि लगता है मुझसे बात करने के अलावा आपको अन्य काम ज्यादा महत्वपूर्ण लग रहा है।" साधु विनम्रतापूर्वक चूहे से जुड़ी अपनी परेशानियों के बारे में भिक्षुक को बताते हैं, कि कैसे चूहा उनके पास से भोजन किसी न किसी तरह से चुरा ही लेता है, "यह चूहा किसी भी बिल्ली या बन्दर को हरा सकता है अगर बात मेरे कटोरे तक पहुँचने कि हो तो! मैंने हर कोशिशें की हैं लेकिन वो हर बार किसी न किसी तरीके से भोजन चुरा ही लेता है। भिक्षुक ने साधु की परेशानियों को समझा, और सलाह दी, "चूहे में इतनी शक्ति, आत्मविश्वास और चंचलता के पीछे अवश्य ही कुछ न कुछ कारण होगा।"

मुझे यकीन है कि इसने बहुत सारा भोजन जमा कर रखा होगा और यही कारण है कि चूहा अपने आप को बड़ा महसूस करता है और इसी से उसे ऊँचा कूदने कि शक्ति मिलती है। चूहा जानता है कि उसके पास कुछ खोने के लिये नहीं है इसलिये वो डरता नहीं है।"

इस प्रकार, साधू और भिक्षुक निष्कर्ष निकालते है कि अगर वे चूहे के बिल तक पहुँचने में सफल होते है तो वे चूहे के भोजन के भण्डार तक पहुँचने में सक्षम हो जायेंगे।

अगली सुबह वो चूहे का पीछा करते हैं और उसके बिल के प्रवेश द्वार तक पहुँच जाते है। जब वो खुदाई शुरू करते है तो देखते हैं की चूहे ने अनाज का एक विशाल भण्डार बना रखा है, साधु ने सारा चुराया गया भोजन एकत्र करके मन्दिर में लिवा ले जाते है। वापस आने पर अपना सारा अनाज गायब देख चूहा बहुत दुखी हुआ और उसे इस बात से गहरा झटका लगा और उसने सारा आत्मविश्वास खो दिया। अब चूहे के पास भोजन का भण्डार नहीं था, फिर भी उसने फैसला किया कि वो फिर से रात को कटोरे से भोजन चुरायेगा लेकिन जब उसने कटोरे तक पहुँचने की कोशिश की, तब वह धड़ाम से नीच गिर गया और उसे यह एहसास हुआ कि अब न तो उसके पर शक्ति है, और न ही आत्मविश्वास। उसी समय साधु ने भी छड़ी से उस पर हमला किया। किसी तरह चूहे ने अपनी जान बचायी व भागने में कामयाब रहा।

शिक्षा : कहानी से हमें ये शिक्षा मिलती है कि यदि हमारे पास भी संसाधनों की कमी न हो तो हममे भी अद्भुत शक्तियाँ और आत्मविश्वास

शपथ लेना तो सरल है

शपथ लेना तो सरल है,
पर निभाना ही कठिन है।
साधना का पथ कठिन है,
साधना का पथ कठिन है।।

शलभ बन जलना सरल है,
प्रेम की जलती शिखा पर;
स्वयं को तिल-तिल जलाकर
दीप बनना ही कठिन है।।1।।

हैं अचेतन जो युगों से,
लहर के अनुकूल बहते!
साथ बहना है सरल,
प्रतिकूल बहना ही कठिन है।।2।।

ठोकरें खाकर नियति की,
युगों से जी रहा मानव
है सरल आँसू बहाना,
मुस्कराना ही कठिन है।।3।।

तप-तपस्या के सहारे,
इन्द्र बनना तो सरल है;
स्वर्ग का ऐश्वर्य पाकर
मद भुलाना ही कठिन है।।4।।

बाल-प्रश्नोत्तरी

01. स्वाधीनता संग्राम सेनानी मक्का पासी किस जिले के निवासी थे?
(क) कानपुर (ख) हरदोई
(ग) लखनऊ (घ) उन्नाव

02. बर्बरीक की माता का क्या नाम था?
(क) शान्ता (ख) दुःसला
(ग) द्रौपदी (घ) मौरवी

03. राम के वनवास काल में नन्दीग्राम में किसने निवास किया?
(क) शत्रुघन (ख) भरत
(ग) लक्ष्मण (घ) विश्वामित्र

04. वाराणसी में कौन सा शक्तिपीठ स्थित है?
(क) शीतला देवी (ख) शैलपुत्री देवी
(ग) विशालाक्षी (घ) अन्नपूर्णा देवी

05. महात्मा बुद्ध ने अपने प्राण कहाँ छोड़े थे?
(क) लुम्बिनी (ख) संकिसा
(ग) सारनाथ (घ) कुशीनगर

06. गंगा एक्सप्रेस-वे का देश में कौन सा स्थान है?
(क) पहला (ख) दूसरा
(ग) तीसरा (घ) चौथा

उत्तर : 1.(ग), 2.(घ), 3.(ख), 4(ग), 5.(घ), 6.(ख)

ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या-ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा : विक्रम संवत्-2083

व्रत-पर्व

16 मई	अमावस्या, शनि जयन्ती, वट सावित्री व्रत
17 मई	अधिक मास प्रारम्भ
20 मई	विनायक चतुर्थी
25 मई	गंगा दशहरा
27 मई	एकादशी

गंगा दशहरा

शनि जयन्ती

स्मरणीय तिथियाँ

19 मई (जयन्ती)-	नाना साहब
19 मई (पुण्यतिथि)	हजारी प्रसाद द्विवेदी, जमशेद जी टाटा
20 मई (जयन्ती)-	सुमित्रानंदन पन्त
20 मई (पुण्यतिथि)-	गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', बिपिन चन्द्र पाल, मल्हारराव होल्कर
21 मई (जयन्ती)-	सर सुंदर लाल (बीएचयू प्रथम कुलपति)
23 मई (जयन्ती)-	पी. सी. वैद्य (प्रहलाद चुन्नीलाल वैद्य)
23 मई (पुण्यतिथि)-	चन्द्रबली सिंह
24 मई (जयन्ती)-	बछेंद्री पाल, करतार सिंह सराभा
25 मई (जयन्ती)-	रास बिहारी बोस
27 मई (पुण्यतिथि)-	रमाबाई आम्बेडकर, सरदार हुकम सिंह
28 मई (जयन्ती)-	वीर सावरकर, महन्त अवैद्यनाथ
28 मई (पुण्यतिथि)-	गोपाल प्रसाद व्यास, विजय सिंह पथिक
29 मई (जयन्ती)-	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
29 मई (पुण्यतिथि)-	चौधरी चरण सिंह
30 मई (पुण्यतिथि)-	गुरु अर्जन देव
31 मई (जयन्ती)-	अहिल्याबाई होल्कर

पाक्षिक राशिफल

ज्योतिर्विद पं. दिवाकर त्रिपाठी
निदेशक- उत्थान ज्योतिष एवं अध्यात्म संस्थान

मेष राशि-

मनोबल में वृद्धि क्रोध में वृद्धि। वाणी व्यवसाय के क्षेत्र से विशेष लाभ पराक्रम वृद्धि। कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा। राजनीति के क्षेत्र से जुड़े लोगों को लाभ होगा।

वृषभ राशि-

सरकारी तंत्र से लाभ बढ़ेगा वाणी। व्यवसाय के क्षेत्र से लाभ बढ़ेगा। नौकरी में परिवर्तन संभव अध्ययन में अवरोध होगा। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा।

मिथुन राशि-

मानसिक उलझन में वृद्धि होगी। पिता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता बढ़ेगा। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में वृद्धि होगा। साझेदारी के कार्यों में लाभ होगा। वाहन की क्षति हो सकती है।

कर्क राशि-

पैर की समस्या में वृद्धि होगी। सामाजिक पद प्रतिष्ठा सम्मान में वृद्धि होगा। नौकरी में वृद्धि होगी। बुद्धिमत्ता के आधार पर आर्थिक प्रगति होगा। अति घनिष्ठ से तनाव।

सिंह राशि-

पद, प्रतिष्ठा एवं सम्मान में वृद्धि होगी। आर्थिक गतिविधियों में सुधार होगा। सन्तान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। कलात्मक कार्यों में वृद्धि होगी। कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा।

कन्या राशि-

गृह एवं वाहन सुख में वृद्धि होगी। पेट की समस्या के कारण तनाव होगा। आर्थिक दबाव महसूस होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगा। प्रतियोगिता में विजय होगी। कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा।

तुला राशि-

वाणी की तीव्रता में वृद्धि होगी। सन्तान पक्ष से चिन्ता बढ़ेगा। अध्ययन अध्यापन में अवरोध होगा। आँखों की समस्या के कारण तनाव बढ़ेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

वृश्चिक राशि-

शत्रुओं पर एवं प्रतियोगिता में विजय प्राप्त होगा। पेशाब सम्बंधित समस्या के कारण तनाव बढ़ेगा। सरकारी तंत्र से लाभ बढ़ेगा। स्थान परिवर्तन का योग बनेगा। यात्रा खर्च में वृद्धि होगी।

धनु राशि-

पराक्रम पुरुषार्थ में वृद्धि होगा। सन्तान की प्रगति से मन प्रसन्न रहेगा। बौद्धिक क्षमता का सकारात्मक परिणाम प्राप्त होगा। मनोबल में वृद्धि होगी। लाभ में वृद्धि होगा।

मकर राशि-

सामाजिक दायरे में वृद्धि होगी। आर्थिक पक्ष मजबूत होगी। क्रोध में वृद्धि होगी। अति घनिष्ठ से तनाव होगा। जमीन, जायदाद एवं अचल संपत्ति का लाभ होगा। यात्रा खर्च में वृद्धि होगी। प्रतियोगिता में वृद्धि होगी।

कुम्भ राशि-

सरकारी तंत्र से लाभ मिलेगा। कला में रुचि बढ़ेगी। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। क्रोध में वृद्धि होगी। पेट एवं पैर की समस्या में वृद्धि होगी। जीवन साथी से सहयोग एवं प्रेम सम्बंधों में वृद्धि होगी। साझेदारी में लाभ होगा।

मीन राशि-

धन सम्बंधित कार्यों में प्रगति होगी। पारिवारिक कार्यों में वृद्धि होगा। दाम्पत्य जीवन एवं साझेदारी के कार्यों को लेकर तनाव बढ़ेगा। अचानक खर्च में वृद्धि होगी।

RNI. No. UPHIN/2015/65982 डाक पंजी. क्र. एस.एस.पी./ल.डब्ल्यू./अन.पी.-511/2025-27 प्रेषण तिथि : 05, 06 व 20, 21 (प्रत्येक माह)

मिशन शक्ति
नारी सुरक्षा
नारी सम्मान
नारी स्वावलंबन

शक्ति से समृद्धि

नारी
उत्तर प्रदेश के विकास की धुरी

नवनिर्माण के 9 वर्ष

सुरक्षा से समझौता नहीं
सभी थानों में 'मिशन शक्ति' केंद्र

मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना
26.81 लाख+
बेटियां सशक्त

निराश्रित महिलाओं को पेंशन

लखपति दीदी योजना
18.55 लाख+
महिलाएं बनीं लखपति

महिला श्रम बल भागीदारी
13% से बढ़कर 36%

1 करोड़+
ग्रामीण महिलाएं बनीं आत्मनिर्भर

मेधावी छात्राओं को स्कूटी का उपहार

कामकाजी महिलाओं के लिए
श्रमजीवी महिला छात्रावास

महिला उद्यमी क्रेडिट कार्ड
ब्याज मुक्त ऋण

10,400+
स्टार्ट-अप का नेतृत्व

विकास की गति अपार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP